विवेकानन्द, सुकर्ण और इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण

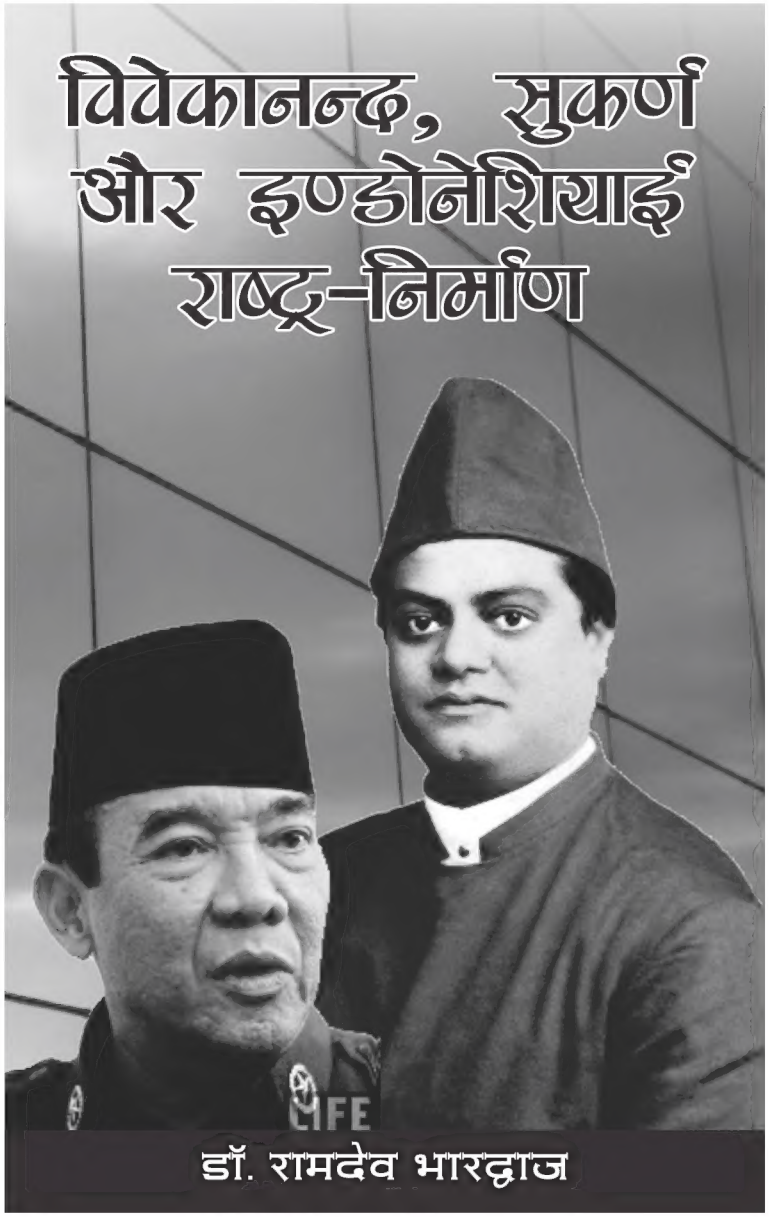

डॉ. रामदेव भारद्वाज

विवेकानन्द, सुकर्ण और इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण

डॉ० रामदेव भारद्वाज

प्रकाशन-विभाग
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
नयी दिल्ली-110 055

'VIVEKĀNANDA, SUKARṆA AURA IṆḌONEŚIĀĪ RĀṢṬRA-NIRMĀṆA'
by Dr. Ram Dev Bharadwaj

Published by:
PUBLICATIONS DEPARTMENT
Akhila Bhāratīya Itihāsa Saṁkalana Yojanā
Baba Sahib Apte Smriti Bhawan, 'Keshav Kunj',
Jhandewalan, New Delhi-110 055
Ph.: 011-23675667
e-mail: abisy84@gmail.com

© **Copyright :** Publisher
First Edition : Kaliyugābda 5115, i.e. 2013 CE
Laser Typesetting & Cover Design by:
Gunjan Aggrawala
Printed at: Graphic World, 1659 Dakhnisarai Street,
Dariyaganj, New Delhi-110055

Price: ₹ 50/-
(माधव संस्कृति न्यास द्वारा वित्तपोषित)

ISBN : 978-93-82424-07-9

प्रकाशक :
प्रकाशन-विभाग
अखिल भारतीय इतिहास-संकलन योजना
बाबा साहेब आपटे-स्मृति भवन, 'केशव-कुञ्ज',
झण्डेवालान, नयी दिल्ली-110 055
दूरभाष : 011-23675667
ई-मेल : abisy84@gmail.com

© **सर्वाधिकार :** प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण : कलियुगाब्द 5115, सन् 2013 ई०
लेज़र-टाईपसेटिंग एवं आवरण-सज्जा :
गुंजन अग्रवाल
मुद्रक : ग्राफ़िक वर्ल्ड, 1659, दखनीराय स्ट्रीट,
दरियागंज, नयी दिल्ली-110 002

भूमिका

राजा राममोहन राय पहले महान् सुधारक थे जो 1831 ई० में विलायत गए थे। राष्ट्रपुरुष स्वामी विवेकानन्द पहले भारतीय थे जो सितम्बर, 1893 ई० में अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व धर्म संसद् में बिना किसी संस्था के प्रतिनिधि के नाते गए थे। प्रसिद्ध यात्री कोलम्बस के जन्म-दिवस पर शिकागो के कोलम्बस हॉल में यह सम्मेलन प्रारम्भ हुआ था। 30-वर्षीय विवेकानन्द ने अपने 200 सेकेन्ड में केवल 468 शब्दों के अपने भाषण में, विश्व के प्रांगण में खड़े हो विश्व चेतना को झकझोर दिया था। पराधीन भारत के इस युवक ने अपने सम्बोधन "सिस्टर एण्ड ब्रदर्श ऑफ़ अमेरिका" ("अमेरिका की बहनो व भाइयो") से वहाँ उपस्थित 7,000 प्रबुद्ध श्रोताओं को चकित कर दिया था तथा सभी खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे थे। उनका यह अति संक्षिप्त भाषण संसार के सम्मुख भारतीय-संस्कृति, धर्म, दर्शन तथा अध्यात्म का पहला परिचय था और तभी से वे विश्व के चहेते बन गए थे। कोई उन्हें 'तूफ़ानी हिंदू' कहता तो कोई उन्हें 'हिंदू-नेपोलियन'। उनके अमेरिका तथा यूरोप में हुए भाषणों से विश्व के अनेक विद्वान् आकर्षित हुए। विश्व का कोई भी प्रमुख देश ऐसा न था जिसने उनके मानव-कल्याणकारी चेतना के स्वर को न सुना हो। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से अनेक देशों को राष्ट्रोत्थान का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वामी विवेकानन्द सही अर्थों में युगद्रष्टा थे। उन्होंने ऊँघते भारत को जगाया तथा उन्हें एक नवजीवन दृष्टि दी। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत से नवप्रेरणा जाग्रत की। वेदान्त के आधार पर धर्म तथा अध्यात्म को सर्वोत्तम बतलाया। आध्यात्मिकता को किसी भी कीमत पर न छोड़ने को कहा। धर्म को राष्ट्र का प्राण बताया। उन्होंने हिंदुत्व को सर्वोत्तम संजीवनी शक्ति बताया। राष्ट्र की उन्नति के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्थान की बात की। पश्चिमी अन्धानुकरण की कड़ी अलोचना की। उन्होंने पराधीनता का मूल कारण आत्मविस्मृति तथा पश्चिम की नकल बताया। उन्होंने देश की युवा पीढ़ी में स्वाभिमान, आत्मगौरव, देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम तथा त्याग की भावना जगायी।

प्रस्तुत लघु ग्रन्थ में प्रबुद्ध विद्वान् प्रो० रामदेव भारद्वाज ने न केवल स्वामी विवेकानन्द के महान् व्यक्तित्व तथा कृतित्व का, स्वतन्त्र इण्डोनेशिया के प्रथम राष्ट्रपति सुकर्ण पर अमिट तथा आत्मिक प्रभावों को दर्शाया है बल्कि भारत तथा इण्डोनेशिया की प्राचीन काल से चली आ रही सांस्कृतिक तथा राजनैतिक कड़ियों को भी बड़े सुन्दर ढंग से जोड़ा है। प्राचीन काल में इण्डोनेशिया को 'इण्डो-नौसेस' अर्थात् 'भारतीय द्वीपान्तर' ही कहा जाता रहा था। औपनिवेशिक आधिपत्य से पूर्व श्रीविजय साम्राज्य तथा मजापहित साम्राज्य यहाँ के गौरवपूर्ण जीवन का अंग रहे। चोल-शासकों ने यहाँ पर सांस्कृतिक तथा धार्मिक चेतना जगायी। मध्य जावा में बोराबुदूर का स्तूप तथा चान्दी प्रम्बनन के मन्दिर-समूह, भगवान् विष्णु के मन्दिर यहाँ के सांस्कृतिक जीवन का अटूट अंग बन गये। भारत के प्रसिद्ध ग्रन्थ, भारत का सामाजिक जीवन, भारत का दर्शन यहाँ के जनजीवन में रच-पच गया।

राष्ट्रपुरुष स्वामी विवेकानन्द के महाप्रयाण से एक वर्ष पूर्व (1901 ई०) में जन्मे सुकर्ण एक जावा-निवासी पिता तथा बाली द्वीप की एक ब्राह्मणी के एकमात्र पुत्र थे। विरासत में उन्हें मिला था माता पिता का भारतीय जीवन-दर्शन से अनुप्राणित संस्कारित जीवन-शैली। बचपन से ही वह अपने माता-पिता की भाँति *महाभारत* तथा *भगवद्गीता* से अत्यधिक प्रभावित थे तथा कालान्तर में गीता के प्रत्येक श्लोक का उन्होंने गम्भीर अध्ययन तथा चिन्तन किया था। सुकर्ण समय-समय पर अपने भाषणों में गीता के श्लोकों तथा उसका अर्थ बोलते थे। उन्होंने एक बार कहा था कि इण्डोनेशियाई जनमानस के रक्त में भारतीय-संस्कृति का वास है।[1] सुकर्ण ने इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की थी तथा

1. Speech by Sh. L.K. Advani, President, BJP, at a function to release the book *'Bhagvad Geeta : the Timeless pertinent'*, New Delhi, June 15, 2005

इसके पश्चात् विदेशी डच-शासकों के विरुद्ध खड़े हो गए थे। वह लगभग दस वर्ष जेल में रहे थे तथा स्वतन्त्र इण्डोनेशिया के पहले राष्ट्रपति रहे।

सुकर्ण इण्डोनेशियाई स्वतन्त्रता-आन्दोलन के पहले प्रमुख नेता थे।[1] उन्होंने विश्व के अनेक महान् पुरुषों के जीवन का गम्भीरता से अध्ययन किया था। वह भारत के अनेक श्रेष्ठ पुरुषों तथा संघर्षकर्ताओं से प्रभावित थे। वह सम्भवतः स्वामी विवेकानन्द के व्यवहार तथा दर्शन से सर्वाधिक प्रभावित थे। उन्हें स्वामी विवेकानन्द का भारत के गाँव-गाँव में घूमना, भारतीय ग़रीबी तथा ग़रीबों के निकट सम्पर्क में आना, महिलाओं की दशा, छूआछूत तथा जाति की जटिलता के प्रति दृष्टिकोण बहुत सुन्दर तथा मार्गदर्शक लगता था। वे स्वामी विवेकानन्द के नैतिक उत्थान के लिए किए प्रयत्नों को बड़ा महत्त्व देते थे।[2] सुकर्ण ने स्वामी विवेकानन्द के 1893 के भाषणों को गहराई से अध्ययन किया था तथा स्वामी जी के इस वाक्य से "अपने मस्तिक को एक पुस्तकालय मत बनाओ, बल्कि अपने ज्ञान को कृत्य में लाओ" ("Don't make your head a Library, but your knowledge into action.") से अत्यधिक प्रेरित थे।[3] यद्यपि यह सर्वज्ञात है कि स्वामी विवेकानन्द विलक्षण बुद्धि (eidetice) वाले महापुरुष थे तथा सुकर्ण तीव्र स्मरण-शक्ति (Photographic) की प्रतिभा के धनी थे।[4]

सुकर्ण ने 1963 में स्वामी विवेकानन्द की जन्म-शताब्दी पर अपने मनोभावों को उनके प्रति व्यक्त करते हुए लिखा था, 'वह उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने मुझे अत्यधिक प्रेरणा दी, दृढ़ बनने की प्रेरणा, ग़रीबों की सेवा करने की प्रेरणा तथा मानवता की सेवा करने की।'[5]

---

1. See, *Enclopædia Britannica*
2. Theodore Friend, *Indonesian Destinies* (USA, 2003), p.25
3. *Ibid*, p.25
4. See *'Voice of Vivekananda'* (A journal published by the Indian community in Indonesia, 1963
5. Chettarje, Deve, *Crime against Humanity : A shocking History of U.S. crimes since 1776* (USA, 2008), p.168; Ram Krishna Mission, Singapore, *'Nirvān', J*ournal No. 76, Jan.-Mar., 1963, p.21; Swami Rangnathananda in *'Voice of Vivekananda'*, trans. in Indonesia, 1963

सुकर्ण विश्व में प्रचलित राजनैतिक विचारधाराओं से भी प्रभावित थे, विशेषकर समाजवाद से। परन्तु उनका समाजवाद स्वामी विवेकानन्द के समाजवाद से था जिसकी जड़ें परम्परागत एवं सांस्कृतिक थीं।[1] सुकर्ण की स्वामी जी के प्रति आत्माभिव्यक्ति इस तथ्य से की जा सकती है कि स्वामी विवेकानन्द-साहित्य का एक पूरा सेट सदैव उनके साथ रहता था, वह प्रतिदिन सोने से पूर्व उनके साहित्य का एक या दो पृष्ठ अवश्य पढ़ते थे।[2]

अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लेखक तथा विचारक प्रो० रामदेव भारद्वाज ने इस पुस्तक में सुकर्ण के राष्ट्रनिर्माण-संबंधी पाँच दार्शनिक-सिद्धान्तों—'पञ्चशिला' अर्थात् 1. राष्ट्रवाद, 2. अंतर्राष्ट्रीयतावाद, 3. प्रजातन्त्र, 4. सामाजिक न्याय तथा 5. ईश्वर से आस्था का सूक्ष्म, गहन तथा गम्भीर विश्लेषण किया है।

इस लघु शोध-पुस्तिका के लेखक जाने-माने विद्वान् प्रो० रामदेव भारद्वाज हैं जो सम्प्रति माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलाधिसचिव हैं। आपने इण्डोनेशिया, चीन, ऑस्ट्रिया आदि विश्व के कई देशों के विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य तथा व्याख्यानमाला दी है। आपके अनेक लेख देश-विदेश की प्रख्यात शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है। प्रस्तुत पुस्तक पठनीय तथा संग्रहनीय है।

—डॉ० सतीशचन्द्र मित्तल
पूर्व प्रोफेसर, इतिहास-विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

6/1277-ए, माधवनगर,
सहारनपुर-247 001 (उ०प्र०)

---

1. Dietmar Rothermund, *'The USA and India : Mutual perceptions and political actions'* in Erich Reiter & Peter Hazdra (Edited) The Impact of Asian powers on Global Development, p.67
2. See Mallikarjun Rao, *'My Favorite Person : A talk on Swami Vivekananda'*, Feb. 23, 2009

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द भारतीय सनातन विचार-प्रवाह के सशक्त संवाहक हैं। उनकी अद्वितीय विश्लेषणात्मक क्षमता अनेक समाजिक कुरीतियों की पहचान और परीक्षण कर उनसे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। विवेकानन्द न सिर्फ़ भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व की मानवता के उन्नयन के लिए समर्पित साधक हैं। मानव-जीवन से जुड़े विविध आयामों के उन्नयन, संतुष्टि, समन्वय और सौहार्द की अंतर्निहित क्षमताओं को जाग्रत कर मानवता को उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान करने के मार्गों की संस्थापना करना तथा मानव को आत्मप्रेरणा, आत्मविश्वास, धैर्य, संयम के साथ लक्ष्य के प्रति निरन्तर आगे की ओर अभिप्रेरित करते रहना विवेकानन्द के विचार और व्यक्तित्व की विलक्षणता है। जिसने विवेकानन्द-विचारामृत का पान कर लिया, वह स्वयं तो स्फूर्तित एवं आलोकित हुआ ही, साथ ही शेष लोगों के हृदयों एवं समाज से भी कुरीतियों, कुण्ठाओं और व्याप्त अन्धकार को समाप्त करने में समर्थ हुआ है। व्यक्ति से व्यक्तित्व और राष्ट्र से राष्ट्रत्व के रूपान्तरण की प्रक्रिया विवेकानन्द-चिन्तन को आत्मसात करने से विकसित होती है। ऐसा ही एक अनुप्रयोग भारतवर्ष के पड़ोसी राष्ट्र इण्डोनेशिया के सन्दर्भ में आता है।

प्रस्तुत पुस्तिका में इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण में स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व और चिन्तन के प्रभावों एवं संघातों की समीक्षा का विनम्र प्रयास किया गया है। भारतीय पुराणों मे 'द्वीपन्तर' भारत अर्थात् 'सुवर्णद्वीप' के नाम से विख्यात आधुनिक इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण की मुख्य धारा एवं जनजीवन का दार्शनिक आधार भारतीय हिंदू-बौद्ध जीवनशैली से ओतप्रोत, सांस्कृतिक धरोहर के प्रति अनुरक्ति तथा स्वामी विवेकानन्द से अनुप्रेरित है।

इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण प्रक्रिया में विवेकानन्द के विचारों का प्रवाह एवं प्रभाव वहाँ के प्रथम राष्ट्रपति सुकर्ण के माध्यम से व्यावहारिक स्वरूप में अवतरित हुआ है। पुस्तिका में स्वामी विवेकानन्द का सुकर्ण पर प्रभाव, हिंदू-सांस्कृतिक विरासत की गत्यात्मकता और राष्ट्र-निर्माण, हिंदू-बौद्ध साम्राज्यों की शक्ति-संपन्नता और उनका वैभव, इस्लाम और औपनिवेशिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक जागरण से राष्ट्रीय जागरण और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया एवं विविध सोपान, सुकर्ण की सामाजिक अभियान्त्रिकी, सुकर्ण पर *रामायण*, *महाभारत*, वेदोपनिषद्, *भगवद्गीता*, स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महर्षि अरविन्द, सरोजिनी नायडू, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, महात्मा गाँधी आदि भारतीय राष्ट्रवादी चिन्तकों का प्रभाव तथा इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण में भारतीय राष्ट्रवादी चिन्तकों के योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही इण्डोनेशियाई राष्ट्र का दार्शनिक आधार पञ्चसिला-राष्ट्रवाद, मानवतावाद, प्रजातन्त्र, सामाजिक न्याय और ईश्वर में विश्वास पर स्वामी विवेकानन्द के प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है।

अखिल भारतीय इतिहास-संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन-सचिव श्री बालमुकुन्द जी पाण्डेय ने पुस्तिका को लिखने की प्रेरणा दी, मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल जी का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन किया और पुस्तिका की भूमिका लिखी। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष मेरे बड़े भाई डॉ० गोविन्द प्रसाद जी शर्मा के प्रति हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे शोधकार्य एवं लेखन में प्रवृत्त किया। पुस्तिका की समुचित प्रस्तुति के लिए श्री गुंजन अग्रवाल के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके प्रयासों से पुस्तिका का यह स्वरूप आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ है।

आशा है कि स्वामी विवेकानन्द की सार्द्ध-शती (150वीं जयन्ती) के अवसर पर यह प्रकाशन आपको अनुकूल लगेगा।

38-बी, विकास भवन, एम०पी० नगर,
ज़ोन-1, भोपाल-462 011 (मध्यप्रदेश)

–रामदेव भारद्वाज

विवेकानन्द शिकागो-विजय दिवस,
11 सितम्बर, 2013 ई०, कलियुगाब्द 5115

डॉ० रामदेव भारद्वाज : संक्षिप्त परिचय

डॉ० रामदेव भारद्वाज राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर (आचार्य) हैं तथा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में कुलाधिसचिव के पद पर कार्यरत हैं। ग्वालियर नगर में जन्मे प्रो० भारद्वाज ने जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से वर्ष 1980 में राजनीतिविज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में स्वर्णपदक के साथ उत्तीर्ण की एवं अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली से 1985 में एम्०फिल्० तथा रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से 1992 में पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त की।

इण्डोनेशियाई सरकार द्वारा प्रदत्त अंतर्राष्ट्रीय शोध-छात्रवृति के अंतर्गत आपने गजामड़ा विश्वविद्यालय (योग्यकर्ता) तथा इण्डोनेशियाई विश्वविद्यालय (योग्यकर्ता) में इण्डोनेशियाई इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं भाषा का अकादमिक सत्र 1984-'85 में अध्ययन किया। इण्डोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुकर्णो पर आपके शोध-कार्य के लिए योग्यकर्ता के 'सुकर्णो फाउण्डेशन फॉर एजुकेशन' द्वारा स्वर्णपदक दिया गया।

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (पेइचिंग, चीन) में अकादमिक सत्र 1991-'92 में आप इण्डियन स्कॉलर रहे तथा एशिया-प्रशान्त अध्ययन-संस्थान, चीनी समाज विज्ञान अकादमी (पेइचिंग) से सम्बद्ध रहकर चीन की खुले द्वार की नीति एवं आधुनिकीकरण, चीन में विवेकानन्द, महात्मा गाँधी तथा कन्फ्यूशियस एवं भारत-चीन संबंधों पर शोध-कार्य किया।

प्रो० भारद्वाज वर्ष 1999 के लिए साल्जबर्ग फेलो रहे। स्लॉसलियोपोल्डस्कोन के आमन्त्रण पर साल्जबर्ग, इन्सुबर्ग तथा वियाना विश्वविद्यालय एवं ऑस्ट्रियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इन्टरनेशनल अफेयर्स, लेक्सनबर्ग में आपने व्याख्यान दिया। प्रो० भारद्वाज को निप्पोन फाउण्डेशन, जापान द्वारा वर्ष 1999-'00 में स्कॉलरशिप भी प्रदान की गयी।

प्रो० भारद्वाज को मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा राजनीति

विज्ञान एवं लोक प्रशासन में सृजनात्मक लेखन के लिए वर्ष 2006 का 'डॉ० शंकर दयाल शर्मा सृजन सम्मान' प्रदान किया गया। मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग की राधाकृष्ण सम्मान समिति ने आपके दो आलेखों को पुरस्कृत किया है। आपके आलेख चीनी, जापानी, स्पेनिश तथा फ्रेंच भाषाओं में भी अनूदित एवं प्रकाशित हुए हैं। प्रो० भारद्वाज भारत-चीन सांस्कृतिक आदान-प्रदान से संबंधित बारह खण्डों में प्रकाशित हो रही पुस्तक की संपादक-समिति में मनोनीत भारतीय सदस्य हैं।

प्रो० भारद्वाज द्वारा 9 प्रमुख पुस्तकों का शोधपूर्ण लेखन किया गया है— 1. *'चायनॉज इकोनॉमिक लिब्रलाइजेशन'*, 2. *'सुकर्णो एण्ड इण्डोनेशियन नेशनलिज्म'*, 3. *'क्रायसिस ऑफ़ मॉर्लिटी इन् लीडरशिप'*, 4. *'इन्टरनेशनल पॉलिटिक्स कंटेम्परारी ट्रेन्ड्स एण्ड इशूज'*, 5. *'भारत और आधुनिक विश्व'*, 6. *'कारगिल : संकट और समाधान'*, 7. *'भारत और अंतर्राष्ट्रीय संबंध'*, 8. *'अंतर्राष्ट्रीय राजनीति : सिद्धान्त और समसामयिक समस्याएँ'* एवं 9. *'राजनय एवं मानवाधिकार'*।

प्रो० भारद्वाज ने चीनी समाजविज्ञान अकादमी में प्रो० बॉग शूइंग के साथ तीन पुस्तकों का सफल संपादन किया है— 1. *'सिनो-इण्डियन कल्चरल एक्सचेंज एण्ड कॉम्परेटिव स्टडी'*, 2. *'बुद्धिज्म एण्ड चायनीच कल्चर'* तथा 3. *'रिलीजन एण्ड इण्डियन सोसायटी'*।

प्रो० भारद्वाज के अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध-पत्रिकाओं में 90 एवं विभिन्न समाचार-पत्रों में 110 से अधिक आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। आपके शोध-आलेख विशेषतः *इण्डोनेशियन क्वार्टरर्ली, पेइचिंग रिव्यू, चायना टुडे, गाँधी मार्ग, स्ट्रेटजिक एनालशिस, पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, इण्डियन ज़र्नल ऑफ़ पॉलिटिकल साइंस, गगनांचल* आदि में प्रकाशित हुए हैं।

सम्प्रति प्रो० भारद्वाज अखिल भारतीय इतिहास-संकलन योजना की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सदस्य हैं।

सम्पर्क :

प्रो० रामदेव भारद्वाज

38-बी, विकास भवन, एम०पी० नगर,

ज़ोन-1, भोपाल-462 011 (मध्यप्रदेश)

दूरभाष : 0755-2551645 (का), 2469972 (आ), मो.: 09893114541

ई-मेल : ramdevbharadwaj47@rediffmail.com

विवेकानन्द, सुकर्ण और इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण

स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व अंतर्राष्ट्रीय था। विश्व का शायद ही ऐसा कोई राष्ट्र अथवा सामाजिक-राजनैतिक चिन्तक और जन-नेतृत्व होगा जो स्वामी विवेकानन्द के विचारों एवं प्रभावों से अछूता रहा हो। शताब्दियों बाद आज भी स्वामी जी प्रेरणाजनक हैं। स्वामी विवेकानन्द राष्ट्रवादी थे। उनके राष्ट्रीयत्व की जड़ें राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना और सांस्कृतिक विरासतों से सिञ्चित होती थीं। उन्हें संस्कृति और सभ्यता में अंतर्निहित शक्ति की प्रचुर क्षमताओं पर विश्वास था। दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के राष्ट्रों में राष्ट्रवाद के उदय और उसके संचालन एवं उनके स्वरूप के निर्धारण तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों की स्वाधीनता के रूप में सकारात्मक परिणिति में स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा और योगदान अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है। स्वामीजी का आकर्षक व्यक्तित्व, जीवन्त शैली, अभिव्यक्ति का हृदयस्पर्शी प्रभाव, विचारों का तार्किक आधार व्यक्ति के अन्दर सम्प्रेषण की अद्‌भुत नेतृत्व-क्षमता को जाग्रत् करने एवं विकसित करने का मूलमंत्र है। स्वामी विवेकानन्द का जीवन विश्व के अनेक व्यक्तियों के चिन्तन एवं आचरण के प्रेरणा-स्रोत के साथ-साथ राष्ट्र-जीवन की मुख्य धारा अर्थात् राष्ट्रीयत्व के मूल स्वरूप को उभारने एवं आमूल परिवर्तन करने का कारक रहा है। ऐसा ही एक सन्दर्भ भारत के परम्परागत पड़ोसी राष्ट्र इण्डोनेशिया का है। इण्डोनेशिया के राष्ट्रवादी नेता एवं प्रथम राष्ट्रपति सुकर्ण (Sukarno, born Kusno Sosrodihardjo : 1901-1970; first President of Indonesia : 1945-1967), स्वामी विवेकानन्द के विचारों से अभिप्रेरित होकर स्वयं तो राष्ट्रत्व के भावों से ओतप्रोत हुए ही, साथ-ही-साथ इण्डोनेशियाई समाज को राष्ट्रवाद के प्रति समर्पण और त्याग के लिए कटिबद्ध करते रहे तथा इण्डोनेशिया को एक समर्थ, सक्षम, शक्तिसम्पन्न राष्ट्रवादी राष्ट्र के रूप में रूपान्तरित करने की आधारशिला रखने में भी सफल हुए। इन्हीं विषयों के सन्दर्भों की व्यापक विवेचना का विनम्र प्रयास प्रस्तुत पुस्तक में किया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तिका में सुकर्ण पर भारतीय-चिन्तकों, विशेषकर स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व एवं विचारों का प्रभाव तथा इसी क्रम में इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन के योगदान की समीक्षा की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से सुकर्ण के व्यक्तित्व में भारतीय-चिन्तन शैली, जीवन-दर्शन, भारतीय-दार्शनिकों, कर्मयोगियों, राजनीतिक नेतृत्वकर्ताओं के विचारों के प्रभावों का विश्लेषण किया जा रहा है जिन्होंने सुकर्ण के मस्तिष्क को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जो कालान्तर में आधुनिक इण्डोनेशिया के रूप में प्रखर हुआ।

इण्डोनेशिया, भारत के पुराणों में 'द्वीपन्तर भारत' (अर्थात् सागरपार भारत) के नाम से विख्यात है। इण्डोनेशिया में 'दीपन्तर' शब्द अभी भी प्रचलित है और इसे जावा-भाषा में 'नुसान्तर' कहते हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा द्वीपसमूहोंवाला राष्ट्र है। इसमें 18,307 द्वीप आते हैं। इनमें जावा (Java), सुमात्रा (Sumatra), सुलावेसी (Sulawesi), लोम्बोक (Lombok), कालीमान्तान (Kalimantan), बाली (Bali), और सुराबाया (Surabaya) द्वीप प्रमुख हैं। भारतीय-पुराणों और *वाल्मीकिरामायण*[1] में सुमात्रा को 'स्वर्णद्वीप' (Island of Gold) और 'स्वर्णभूमि' (Land of Gold) के नाम से अभिहित किया गया है। इण्डोनेशिया में 87.18 प्रतिशत लोग इस्लाम को माननेवाले हैं [2]

---

1. **'यत्नवन्तं यवद्वीपं सप्तराज्जोपशोभितम्।**
   सुवर्णरूप्यक द्वीपं सुवर्णाकरमण्डितम्॥
   यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः।
   दिवं स्पृशति शृंगेण देवदानवसेवितः॥'
   —*वाल्मीकीयरामायण*, किष्किन्धाकाण्ड, 40.30-31 (गीताप्रेस-संस्करण)
2. "Penduduk Menurut Wilayah dan Agama yang Dianut" [Population by

और यह विश्व का सर्वाधिक मुस्लिम आबादीवाला देश है। यद्यपि इण्डोनेशिया में सिर्फ 1.69 प्रतिशत लोग ही हिंदू-धर्म के अनुकरणकर्ता हैं तथापि हिंदू-संस्कृति, जीवन-दर्शन और मान्यताओं का प्रभाव इण्डोनेशियाई समाज, राजनीति एवं जनजीवन में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप से परिलक्षित होता है। यद्यपि सम्पूर्ण इण्डोनेशिया में मस्जिदों का जाल फैला हुआ है। नमाज के समय दिन में पाँच बार पूरे देश में कुरआन की आयतें गूँज उठती हैं, आप कहीं भी खड़े हैं, चल रहे हैं, नमाज के वक़्त आपके कानों में यह आवाज़ आएगी। सरकारी एवं ग़ैर-सरकारी कार्यालयों में, विश्वविद्यालयों में, दुकानों, में बड़े-बड़े क्रय-विक्रय केन्द्रों में नमाज पढ़ने के लिए अलग से स्थान की व्यवस्था होती है। नमाज के वक़्त प्रायः सभी कामकाज बन्द हो जाते हैं और सभी लोग नमाज पढ़ते हैं। तथापि इण्डोनेशिया इस्लामी देश नहीं है। इतना ही नहीं, इसके साथ-साथ हिंदू-बौद्ध जीवन-शैली, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को इण्डोनेशियाई सरकार ने जिस तरह संरक्षित एवं गतिशील बनाए रखा है, वह आश्चर्यजनक एवं अनुकरणीय है। यहाँ के विश्वविद्यालयों, सरकारी कार्यालयों, पुस्तकालयों के मुख्य द्वार पर हमें भगवान् श्रीगणेश की प्रतिमा देखने को मिलती है जिन्हें लोग 'देवाइल्मू' अर्थात् ज्ञान के देवता के नाम से पुकारते हैं तथा इन्हें ज्ञान का प्रतीक मानते हैं। *रामायण* एवं *महाभारत* से प्रेरणादायी प्रसंगों को दूरदर्शन पर नित्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत दिखाया जाता है। आकाशवाणी से रामायण प्रसारित की जाती है। ये सब बातें यह प्रमाणित करती हैं कि भारतीय संस्कृति की जड़ें इण्डोनेशियाई जनजीवन में कितनी गहराई तक पैठी हुई हैं। बाली द्वीप, जहाँ पर 83.5 प्रतिशत हिंदू-धर्मावलम्बी निवास करते हैं [1], की तो बात ही कुछ और है। दिन में तीन बार पूजा और ध्यान यहाँ के लोगों के दैनिक जीवन का ही अंग है। गायत्री मंत्र का जाप और सन्ध्या-जप बालीवासियों के नित्य कर्म हैं, हर घर में

Region and Religion] *Sensus Penduduk 2010*. Jakarta, Indonesia: Badan Pusat Statistik. 15 May 2010. Retrieved 20 Nov 2011. "Religion is belief in Almighty God that must be possessed by every human being. Religion can be divided into Muslim, Christian, Catholic, Hindu, Buddhist, Hu Khong Chu, and Other Religion." Muslim 20,71,76,162 (87.18%), Christian 1,65,28,513 (6.96), Catholic 69,07,873 (2.91), Hindu 40,12,116 (1.69), Buddhist 17,03,254 (0.72), Khong Hu Chu 1,17,091 (0.05), Other 2,99,617 (0.13), Not Stated 1,39,582 (0.06), Not Asked 7,57,118 (0.32), Total 2,37,641,326

1. Penduduk Menurut Wilayah dan Agama yang Dianut (2010 Census).

मन्दिर है। हिंदूधर्मा विश्वविद्यालय (देनपसार, बाली) के पुस्तकालय के मध्य में 'वेद' की पुस्तक रखी है। लोग पुस्तकालय में प्रवेश करने पर वेद को प्रणाम करते हैं और फिर अध्ययन। इण्डोनेशिया वह देश है जहाँ हम हिंदू और इस्लामी संस्कृति का सम्मिश्रण देख सकते हैं और राष्ट्र के पुनर्निर्माण में धर्म और संस्कृति की सक्रिय एवं गत्यात्मक शक्ति का उपयोग किस प्रकार किया गया है, इसकी प्रेरणा भी ले सकते हैं।

राजनैतिक विश्लेषक आश्चर्य करते हैं कि यह सब कैसे हो रहा है। वस्तुतः आधुनिक इण्डोनेशिया में इस प्रकार की व्यापक एवं रचनात्मक सहिष्णु जीवन-शैली के सृजन में इण्डोनेशिया के प्रखर राष्ट्रवादी नेता एवं पूर्व राष्ट्रपति सुकर्ण की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रही है। सुकर्ण की सुविचारित दृष्टि के ही परिणामस्वरूप अनेक दबावों के बाद भी आधुनिक इण्डोनेशिया इस्लामी राष्ट्र नहीं बना।

सुकर्ण के पिता **रादेन सुकेमी सोसरोदीहार्जो** (Raden Soekemi Sosrodihardjo) जावा द्वीप में स्कूल शिक्षक थे तथा माँ **इड़ा आयू न्योमन राय** (Ida Ayu Nyoman Rai) बाली द्वीपवासी ब्राह्मण हिंदू थीं और बाली के बुलेलेंग-राजपरिवार से थीं। सुकर्ण के पिता *महाभारत* के पात्र कर्ण से प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने बेटे का नाम सुकर्ण रखा। मुस्लिम-राष्ट्रवादी नेता चक्रोअमीनोतो (Hadji Oemar Said Tjokroaminoto : 1882-1934) के घर की इस्लामिक शिक्षा एवं इस्लामिक गतिविधियाँ और इस्लामिक नेताओं—समाउन, शाहरीर (Sutan Sjahrir : 1909-1966), सुदार्सोनो, आलीमान, मोहम्मद यामीन, डॉ० वाहीदीन, मोहम्मद हट्टा (Mohammad Hatta : 1902-1980) आदि के इस्लामी तर्क सुकर्ण को आकर्षित नहीं कर सके। उनके मन में तो विशुद्ध राष्ट्रवादी बनने का विचार पनप रहा था, इसीलिए इंजीनियर की उपाधि प्राप्त करने के बाद वह सामाजिक यान्त्रिकीकरण में लग गए और इण्डोनेशिया को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में संकल्प के साथ राष्ट्रीय एकता और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में सम्मिलित हो गये।

सुकर्ण ने *रामायण* और *महाभारत* की कथाएँ बचपन में ही सुनी थीं तथा उनके प्रेरक प्रसंगों को उन्होंने अपने अंतःकरण की गहराइयों तक उतारा था जिसने उनके आत्मविश्वास को दृढ़ बनाया। *महाभारत* के पात्र कर्ण की वीरता एवं कर्तव्यनिष्ठ छवि बचपन से ही सुकर्ण का प्रेरणा-स्रोत रही। सुकर्ण

डच-उपनिवेशवादियों को सदैव ही कौरवों तथा इण्डोनेशिया को पाण्डवों के रूप में देखते थे। उनका विश्वास था कि स्वाधीनता-संघर्ष में अन्तिम विजय पाण्डवरूपी इण्डोनेशिया की ही होगी। भारतीय विचारकों तथा राजनीतिक नेताओं में स्वामी विवेकानन्द (1863-1902), महात्मा गाँधी (1869-1948), श्रीअरविन्द (1872-1950), सरोजिनी नायडू (1879-1949), लोकमान्य तिलक (1856-1920), विपिनचन्द्र पाल (1858-1932), सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (1848-1925) आदि से सुकर्ण ने प्रेरणा ली तथा उनके विचारों एवं कार्यों को अपने व्यक्तित्व तथा राजनीतिक जीवन में अपनाया।

स्वामी विवेकानन्द और सुकर्ण

भारत के महान् कर्मयोगी स्वामी विवेकानन्द का सुकर्ण और उसकी विचारधारा पर सर्वाधिक प्रभाव था। विवेकानन्द सुकर्ण के प्रेरणा-स्रोत थे। सुकर्ण ने स्वामी रंगनाथानन्द जी (1908-2005) द्वारा लिखित *'Voice of Vivekananda'* के इण्डोनेशियाई अनुवाद *'Suara Vivekananda'*[1] की प्रस्तावना में लिखा है—

> 'स्वामी विवेकानन्द उन कुछ व्यक्तियों में से थे जिन्होंने मुझे बहुत ज्यादा प्रेरणा दी शक्तिशाली बनने की प्रेरणा, खुदा का भक्त, अपने राष्ट्र का एवं गरीबों का सच्चा सेवक बनने की प्रेरणा दी और यह प्रेरणा मुझे सम्पूर्ण मानवता की सेवा करने के लिए प्रेरित करती थी।'[2]

ये (विवेकानन्द) वही थे जिन्होंने कहा था कि हम लोग बहुत रो चुके हैं अब और नहीं रोना है। अब समय आ गया है कि हम अपने पैरों पर खड़े हो जाएँ और महामानव बन जाएँ।[3] इण्डोनेशिया के सभी लोग डच-उपनिवेशवाद को समाप्तकर स्वतन्त्र इण्डोनेशिया की स्थापना चाहते थे, परन्तु ये व्यक्ति परस्पर-विरोधी विचारधाराओं में विभाजित थे। परस्पर तनाव और टकराव के कारण ये लोग चाहकर और सक्षम होते हुए भी अपनी शक्ति एवं क्षमता का डचों

1. *Suara Vivekananda : dikumpulkan oleh Swami Rangarnathananda ; diterdjemahkan oleh Yogarmurti Souw Tjiang Poh* by Swami Ranganathananda and S. Yogamurti, Published by Masharakat India, 1963, Total no. of pages 93
2. Swami Rangnathanand; *Voice of Vivekananda*, translated in Indonesian language by Yogamurti Souw Tjiang Pon, as Suara Vivekanand, Forwarded by President Sukarno, 1963
3. *Ibid*

के विरोध में पूरा उपयोग नहीं कर पाते थे। इसी कारण डचों की शक्ति का विकास तथा इण्डोनेशिया की शक्ति का ह्रास होता था। सुकर्ण ने ऐसे समय बिखरी हुई पृथक्-पृथक् बौद्धिक एवं वैचारिक स्तर पर तर्क में तल्लीन व्यक्तियों को संगठित होने को कहा। वैचारिक धरातल पर (सैद्धातिक रूप से) तर्कशक्ति से पूर्ण तथा व्यवहार में अपूर्ण इण्डोनेशिया के बुद्धिजीवियों को स्वामी विवेकानन्द के इस कथन से प्रेरणा लेने को कहा। जो सुकर्ण ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि अपना सिर पुस्तकालय में परिवर्तित मत करो। सिर्फ़ तर्क और परस्पर विरोध से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी। जीवन में उद्देश्य-निर्धारण और उद्देश्य-प्राप्ति के लिए विचारों का व्यवहार में अनुकरण आवश्यक है।[1] सुकर्ण ने लिखा है कि स्वामी विवेकानन्द के इस कथन को मैंने अपने निजी जीवन में प्रयोगात्मक रूप दिया। मैं क्या पढ़ता आया हूँ, क्या सुनता आया हूँ और मैं व्यवहार में क्या करता आया हूँ, इस बात पर मैंने बहुत ध्यान दिया। मैंने अपनी कल्पना में उस अद्भुत एवं अद्वितीय मानव-सभ्यता के बारे में सदैव सोचा तथा अपने विचारों को मातृभूमि के साथ व्यावहारिक रूप देने का प्रयास करता रहा।[2] स्वामी विवेकानन्द से प्रेरणा लेकर सुकर्ण ने, जो वह सोचता था, उसे व्यावहारिक जीवन में अपनाया। सुकर्ण ने लिखा है कि स्वामी विवेकानन्द के अध्ययन के पश्चात् मैंने धीरे-धीरे अपने आपको एक पक्के इरादे के राष्ट्रवादी के रूप में परिवर्तित होता पाया और मैंने इस बात को समझा कि स्वप्नलोक में उभरते हुए इण्डोनेशिया को यथार्थ में अवतरित करना कठिन कार्य होगा, परन्तु मैं अपने को स्वप्नलोक में स्वीकार नहीं कर सकता।[3] सुकर्ण का मतलब यही था कि अच्छे-अच्छे सपने देखते रहने, विचारों को पुस्तकों से अंकित करते रहने का तब तक कोई लाभ नहीं जब तक इन विचारों को अपने कर्मों में नहीं अपनाया जाता। सुकर्ण ने इस प्रकार विचारों एवं कर्मों की एकरूपता का सबक स्वामी विवेकानन्द से ग्रहण किया।

1. Sukarno; *Soekano an Autobiography: As Told to Cindy Admas*, USA & Canada, 1966, pp.74-75
2. *Ibid*
3. Fisher, Chrls A, *South-East Asia : A Social, Economic & Political Geography*, New York, 1965, p.208

हिन्दू–सांस्कृतिक विरासत की गत्यात्मकता और राष्ट्र–निर्माण

सुकर्ण की प्रबल धारणा थी कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसके अतीत में निवास करती है, राष्ट्र की जड़ें उसके इतिहास में निहित होती हैं और राष्ट्र की संस्कृति, साहित्य, दर्शन, जीवनशैली तथा परम्पराओं में राष्ट्र का स्वरूप परिलक्षित और पल्लवित होता है। सांस्कृतिक विरासत की गत्यात्मकता और वर्तमान समय की चुनौतियाँ राष्ट्र के राष्ट्रत्व का सृजन करती हैं। अतएव ये सब राष्ट्र-निर्माण के प्रेरक तत्त्व हैं। सुकर्ण के इन विचारों के स्रोत थे स्वामी विवेकानन्द। स्वामी विवेकानन्द प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर और मान्यताओं को राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक मानते थे। इन्हीं से स्वामी जी प्रेरणा लेते थे क्योंकि उनकी धारणा थी कि प्राचीन धरोहर ही राष्ट्र की सञ्चित निधि होती है। स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन एवं कृत्यों का आधार भारत के अतीत के गौरव को पुनः प्राप्त करना था। जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्द विश्व में भारत के गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे, उसी प्रकार उनसे प्रेरणा लेकर सुकर्ण ने भी इण्डोनेशिया की प्राचीन गौरवपूर्ण शक्ति-सम्पन्नता एवं राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रवादी साम्राज्यों की शक्ति-सम्पन्नता एवं महानता को इण्डोनेशिया का आदर्श माना। सुकर्ण की धारणा थी कि इण्डोनेशिया को श्रीविजय-साम्राज्य (634-1376) एवं मजापहित-साम्राज्य (Majapahit empire : 1293-1327) की अद्‌भुत शक्ति के अनुरूप पुनर्स्थापित होना है। यह तभी सम्भव है जब हम अपने गौरवमयी अतीत से प्रेरणा लें। इस प्रकार सुकर्ण, विवेकानन्द से प्रेरणा लेकर उनके विचारों को इण्डोनेशियाई जनव्यवहार में उतारने का समर्थक हुआ। स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के पुनर्जागरण एवं समाजसुधार की दिशा में अग्रणी थे। उनका व्यक्तित्व, जीवन-दर्शन विस्तृत और समन्वयकारी था। वे एक आध्यात्मिक शिक्षक ही नहीं अपितु समाज और राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान की दिशा में मार्ग प्रशस्तकर्ता भी थे। नारी-शिक्षा, उसका उत्थान, अस्पृश्यता का विरोध, चरित्र-निर्माण को व्यावहारिक दिशा देने की स्वामी जी की पद्धति ने सुकर्ण को प्रभावित किया।

हिंदू–साम्राज्यों की शक्ति–सम्पन्नता एवं वैभव

इण्डोनेशियाई राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र-निर्माण की प्रेरक शक्ति के रूप में

इण्डोनेशिया के दो प्रधान हिंदू एवं बौद्ध-साम्राज्य– श्रीविजय-साम्राज्य और मजापहित-साम्राज्यों की शक्ति-सम्पन्नता, एकरूपता की भावना, उनकी प्रसिद्धि और महानता ने सकारात्मक भूमिका निभायी। सुकर्ण और अन्य इण्डोनेशियाई-राष्ट्रवादियों के हृदयों में दोनों साम्राज्यों की शक्ति-सम्पन्नता एवं वैभव राष्ट्रीय आदर्श के रूप में स्वाधीनता काल में स्थापित रहा तथा आज भी इण्डोनेशिया का राष्ट्रीय लक्ष्य दोनों साम्राज्यों की तरह शक्ति-सम्पन्न बनना है।

प्रचुर खनिज-सम्पदा एवं विशिष्ट भू-राजनीतिक स्थिति के कारण इण्डोनेशिया प्राचीनकाल से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। प्रथम एवं द्वितीय शताब्दी से ही भारतीय व्यापारी इस क्षेत्र में व्यापार के लिए आते रहे हैं। इस क्षेत्र के जनजीवन को भारतीय-संस्कृति, धर्म एवं मान्यताओं ने अत्यधिक प्रभावित किया है। इण्डोनेशिया में प्रचलित धर्म एवं मान्यताओं में हिंदू-धर्म, बौद्ध-धर्म तथा इस्लाम भारत से ही गए जो भारत के इस क्षेत्र के साथ सांस्कृतिक संबंधों की निकटता को दर्शाते हैं। इण्डोनेशिया में प्राचीनकाल में हिंदू-राज्यों का उदय जावा एवं सुमात्रा द्वीपसमूहों पर देखने में आता है। जावा, सुमात्रा, बाली द्वीपसमूहों में अनेक हिंदू-मन्दिर, मध्य जावा में नवीं शताब्दी के बोरोबुदूर स्तूप (Borobudur or Barabudur) और 'चण्डी प्रम्बनन' (परब्रह्मन) (Candi Prambanan or Candi Rara Jonggrang) मन्दिर-समूह, भगवान् विष्णु के मन्दिर प्राचीन भारतीय संस्कृति व धार्मिक जीवन की परस्परिक निकटता को दर्शाते हैं। इन द्वीपसमूहों के राजाओं एवं प्रजा ने भारतीय मान्यताओं को आत्मसात् किया।

सातवीं शताब्दी में वाणिज्य-नेतृत्व एवं राजनीतिक प्रभुत्व लिए हुए महानतम समुद्री बन्दरगाह की शक्ति के रूप में दक्षिण सुमात्रा द्वीप में श्रीविजय-साम्राज्य का अभ्युदय इण्डोनेशिया में भारतीय संस्कृति के प्रभाव, वैभव के विस्तार की ऐतिहासिक घटना है।[1] श्रीविजय-साम्राज्य में *रामायण, महाभारत,* पुराणादि भारतीय-धर्मग्रन्थ न केवल प्रेरणा-स्रोत थे बल्कि वहाँ के स्थानीय साहित्य एवं दर्शन पर भी इनका प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।[2] 7वीं शताब्दी

1. DGE Hall; *A History of South-East Asia*, New York, 1955,p.35
2. Sastry Nilakanta, K.A., *A history of Sri Vijaya*, Madras, 1949, p.10

में ही यहाँ बौद्ध-धर्म का प्रसार हुआ। श्रीविजय साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार उत्तर-पश्चिम में मलक्का जलडमरूमध्य (Strait of Malacca) की ओर तक था।[1] सम्पूर्ण श्रीविजय-साम्राज्य एक ओर फॉरमोसा तथा श्रीलंका के मध्य तथा दूसरी ओर दी फिलीपीन्स (The Philippines) तथा कम्बोडिया (Cambodia) के मध्य तक फैला हुआ था।[2] इस प्रकार सुण्डा (The Sunda Strait) एवं मलक्का जलडमरूमध्य पर श्रीविजय-साम्राज्य का विस्तार इस बात का प्रमाण देता है कि भारत-चीन एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के मध्य व्यापारिक जलमार्गों पर श्रीविजय-साम्राज्य का एकाधिकार स्थापित था।[3] प्रो० हाल का कहना है कि श्रीविजय-साम्राज्य का वाणिज्य एवं व्यापार पर एकाधिकार ठीक उसी तरह था जैसा कि 17वीं शताब्दी में डचों का था।[4] इस क्षेत्र से गुजरनेवाले समुद्री जहाजों को बाध्य होकर श्रीविजय-साम्राज्य के बन्दरगाहों को चुंगी एवं कर देना होता था।[5] सुकर्ण कहता था कि यह हमारा वैभव है, यह हमारे राष्ट्र की शक्ति और सम्पन्नता का द्योतक है। हमें इण्डोनेशियाई राष्ट्र को श्रीविजय की तरह सुदृढ़ एवं प्रभावशाली बनाना है और प्राचीन वैभव को पुनः प्राप्त करना है।

भारत, चीन के सम्पूर्ण व्यापारिक मार्गों पर श्रीविजय-साम्राज्य का एकाधिकार एवं प्रभुत्व बिना किसी चुनौती एवं आपत्ति के तीन शताब्दियों तक रहा। श्रीविजय की बढ़ती हुई इस शक्ति को सर्वप्रथम 10वीं शताब्दी में पूर्वी जावा के माताराम शासक (Mataram ruler) ने चुनौती दी।[6] श्रीविजय के एकाधिकार पर प्रभावशाली आक्रमण दक्षिण भारतीय राजेन्द्र चोल (1012-1044) ने 1025 ई० में किया। चोल ने श्रीविजय के बन्दरगाह लीगोर (Ligor), केडाह (Kedah, now in modern Malaysia), तुनासिक तथा पूरे मलाया तट पर विजय प्राप्त की।[7] जावा में सिंगसारी राज्य (Singhasari kingdom : 1222-1292) एवं मजापहित-साम्राज्य के उदय एवं उनसे संघर्ष में श्रीविजय-साम्राज्य का पतन हुआ।

1. Coedes, G, *The Indianized State of South-East Asia*, Honolulu, 1968, p.34
2. Nilakants Sastri, op.cit., p.34
3. Harrison, Brian; *South-East Asia: A Short History*, New York, 1966, pp.23-24
4. Hall, op.cit., p.53
5. Nilakanta Sastri, op.cit., p.46-47
6. Majumdar, RC; *Hindu Colonies in Far East*, Calcutta, 1963, p.171
7. *Ibid*

श्रीविजय के पतन के बाद 13वीं शताब्दी (1293 ई०) में जावा द्वीप में शक्तिशाली मजापहित साम्राज्य का उदय हुआ।[1] मजापहित साम्राज्य में समाज के लोगों को हिंदू वर्ण-व्यवस्था के आधार पर ही चार वर्णों में वर्गीकृत किया गया था— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। सभी हिंदू-धर्मग्रन्थों को आदर्श रूप प्राप्त था। सामाजिक व्यवस्था मनु के क़ानून एवं चाणक्य के *अर्थशास्त्र* पर आधारित थी।[2] मजापहित-साम्राज्य का स्वर्णिम युग प्रधानमंत्री गजह मद (Gajah Mada : 1290-1364) के समय का था। गजह मद की सामरिक नीति के प्रयासों द्वारा ही मजापहित-साम्राज्य की शक्ति-सम्पन्नता का विस्तार हुआ।[3] मजापहित साम्राज्य का आदर्श इण्डोनेशिया की एकता एवं अखण्डता को प्राप्त करता था। इण्डोनेशिया के इतिहास में पहली बार बाली द्वीप, बोर्नियो द्वीप, सुलावेसी द्वीप, मलुकु द्वीप, सुमात्रा द्वीप, और मलक्का जलडमरूमध्य के राज्यों तथा अनेक छोटे-छोटे द्वीपों को मजापहित साम्राज्य ने अपने अंतर्गत ले लिया था और इण्डोनेशिया में द्वीपसमूहों की एकता व अखण्डता के स्वप्न को पूरा किया था। पुरानी जावीय पेथी *'नगाराकर्ता गामा'* अथवा *'देशवर्णन'* (The Nagarakretagama or Nagarakrtagama, also known as Desawarnana) के अनुसार मजापहित साम्राज्य का व्यापार इण्डोनेशिया में विविध द्वीपसमूह तक ही नहीं अपितु उपमहाद्वीपें— भारत, स्याम, कम्बोडिया, वियतनाम (अन्नाम), यहाँ तक कि चीन तक था।[4] इन पारस्परिक व्यापारिक संबंधों ने मजापहित साम्राज्य की प्रसिद्धि को द्वीपसमूहों तथा उससे बाहर बढ़ाया। गजह मद की मृत्यु (1364 ई०) के बाद से ही मजापहित साम्राज्य का पतन आरम्भ हुआ। मजापहित साम्राज्य का पतन केवल मध्ययुग की समाप्ति को ही नहीं दर्शाता बल्कि औपनिवेशिक युग को भी आरम्भ करता है जिसमें यूरोपीय शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ।[5] 1400 ई० के अन्त में मजापहित साम्राज्य की शक्तियों के साथ-साथ इण्डोनेशिया में इस्लाम का अभ्युदय भी होने लगा था।[6] इण्डोनेशिया में इस्लाम का प्रचार भारतीय-गुजराती मुसलमान व्यापारियों द्वारा

1. Hall; op.cit., p.77-78
2. Muljana Salamat, *A History of Majapahit*, Singapur University Press, 1976, p.106
3. *Ibid*, pp.133,181
4. *Ibid*, p.140
5. Chatterji; B.R., *History of Indonesia: Early & Medieval*, Delhi,1967,p.99
6. Coedes; op.cit., p.143

हुआ। 14वीं शताब्दी तक कुछ राज्यों में इस्लाम स्वीकार किया जाने लगा और धीरे-धीरे इस्लाम सुमात्रा द्वीप पर स्थापित हुआ। 1478 ई० तक जावा द्वीप के तटवर्तीय मार्गों का इस्लामीकरण हो चुका था।[1] 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मलाका, पूर्व और पश्चिम के मध्य (अर्थात् एक ओर चीन एवं जावा तथा दूसरी ओर भारत एवं अरब) बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र बन चुका था। भारतीय व्यापारियों के मलाका के साथ बहुत अच्छे संबंध थे।[2] इसी कालखण्ड में इस्लाम के प्रचार के साथ-साथ यूरोपीय शक्तियों के प्रवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। 16वीं शताब्दी से इण्डोनेशिया का इतिहास एक नयी दिशा की ओर बढ़ा।

औपनिवेशिक पृष्ठभूमि

सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों के आगमन से दक्षिण-पूर्वी एशिया यूरोपीय शक्तियों के लिए प्रतिस्पर्धा-स्थल बन गया। 20 मई, 1498 ई० को वास्को-डी-गामा (D. Vasco da Gama : 1460-1524) का कालीकट (केरल) पर आना एशिया और यूरोप के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना थी।[3] पुर्तगालियों के आगमन के दो उद्देश्य थे— 1. पूर्वी माल के व्यापारिक बहाव को नियन्त्रित करना तथा मुसलमानों के मध्य-पूर्व मार्ग पर व्यापारिक आधिपत्य समाप्त करना एवं व्यापार को नये समुद्री मार्ग द्वारा अपने आधिपत्य में लाना एवं 2. भारत, चीन एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया के समुद्री मार्गों पर अपना एकाधिकार स्थापित करना।[4] पुर्तगालियों की इसी योजना के अनुसार 15 अगस्त, 1511 ई० को अल्फांसो डे अल्बुकर्क (Afonso de Albuquerque : 1453-1515) ने मलक्का बन्दरगाह पर अधिकार स्थापित किया। पुर्तगालियों का इस क्षेत्र में 130 वर्षों तक व्यापारिक एकाधिकार डचों के लिए आकर्षण का कारण रहा। 20 मार्च, 1602 को डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी (The Dutch East India Company) की स्थापना हुई।[5] 1619 में डचों ने बटाविया (Batavia) (अब जकार्ता) पर अधिकार स्थापित कर लिया[6] तथा 17वीं शताब्दी के मध्य तक डच ईस्ट इण्डिया

1. Chatterji; op.cit., p.104
2. *Ibid*, p.104
3. Panikkar, K.M., *Asia & Western Dominance: A Survey of the Vasco De Gama epoch of Asian History*, 1498-1945, London, 1959, pp. 66-68
4. Harrison, op.cit., p.66
5. Vandenbasch, Amry, *The Dutch East Indies: Its Government Problems & Politics*, London, 1944, pp.51-52
6. Furnivall, J.S., *Colonial Policy and Practice*, New York, 1956, pp 218-219

कम्पनी का भारतीय कपड़ों एवं दालचीनी, जापानी, तांबे, चीनी, शक्कर, फारम का रेशम तथा मलूकू द्वीप के मसालों पर व्यापारिक नियन्त्रण स्थापित हो गया।[1] 18वीं शताब्दी में डच शासक, जावा के माताराम राज्य को अपने हितों के अनुसार दो राज्यों— 1. सुराकार्ता (Surakarta) और 2. योग्यकर्ता में विभाजित करने में सफल हुए, परन्तु नेपोलियन-युद्ध में हॉलैण्ड पर नेपोलियन (Napoleon Bonaparte : 1769-1821) का आधिपत्य स्थापित हुआ। फलतः हॉलैण्ड के अधीनस्थ इण्डोनेशिया फ्रांस के क्षेत्राधिकार में आ गया। नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा इण्डोनेशिया की सुरक्षा, आधिपत्य, विस्तार एवं प्रशासन के लिए हर्मन विलेम डाइंडेल्स (Herman Willem Daendels : 1808-1811) को गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया।[2] विलेम ने स्थानीय व्यक्तियों एवं भूपतिओं से सभी शक्तियाँ छीनकर सरकार में केन्द्रित कर दीं।[3] सन् 1811 से 1816 तक इण्डोनेशिया ब्रिटिश राज्य के अधीन रहा। भारत के गर्वनर जनरल लॉर्ड मिन्टो (Gilbert Elliot-Murray-Kynynmound, Baron Minto : 1807-1813) द्वारा थॉमस स्टैमफोर्ड बिंगले रैफल्स (Thomas Stamford Bingley Raffles : 1811-1816) को जावा का लेफ्टीनेंट गर्वनर नियुक्त किया गया।[4] लेकिन 13 अगस्त, 1814 को आंग्ल-डच-सन्धि (Anglo-Dutch Treaty) द्वारा इण्डोनेशिया पुनः नीदरलैण्ड के अधिकार-क्षेत्र में आ गया।[5] प्रथम विश्वयुद्ध अर्थात् 1919 तक सुमात्रा, पडांग, पलिम्बांग, बोर्नियो, उत्तरी सुलावेसी, मकासार, मिनाहासा क्षेत्रों पर डचों का प्रभाव स्थापित हो गया था।[6]

इस प्रकार कुल 1,400 वर्षों तक इण्डोनेशिया सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की दृष्टि से हिंदू जीवन-दर्शन एवं मान्यताओं के अनुरूप व्यक्ति-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहा। सन् 1200 से 1600 तक के कालखण्ड में इण्डोनेशिया इस्लामी शासकों के अधीन रहा। सन् 1498 से 1625 अर्थात् लगभग 130 वर्षों तक इण्डोनेशिया औपनिवेशिक शक्ति—

1. Vlekke, Bernard H.M., Nusantara, *A History of Indonesia*, Brussel, 1943, pp.159-160
2. Vandenbosch, op.cit., p.54
3. Vishal Singh, 'Colonial Background of Indonesian politics', *International Studies*, Vol. XV, No. I, Jan-March 1976, pp.2-3
4. Vlekke; op.cit., pp.238-239
5. Vishal Singh, *The Indonesian political parties*, Ph.D. Thesis, Indian School of international Studies, New Delhi,1961, p.30-31
6. Vandenbosch, op.cit., p.56

पुर्तगालियों के अधीन रहा। इसी कालखण्ड में अल्प समय के लिए इण्डोनेशिया हालैण्ड तथा ब्रिटेन के अधीन भी रहा। परन्तु सन् 1600 से 1942 तक अर्थात् लगभग 350 वर्षों तक इण्डोनेशिया पर औपनिवेशिक शक्ति नीदरलैण्ड (डच) का शासन रहा। सन् 1942 से अगस्त, 1945 तक इण्डोनेशिया जापान के आधिपत्य में रहा। इस प्रकार कुल 450 वर्षों तक औपनिवेशिक शक्तियों ने इण्डोनेशिया का दोहन और शोषण किया।

सांस्कृतिक जागरण से राष्ट्रीय जागरण और राष्ट्र–निर्माण

राष्ट्र-भक्ति, राष्ट्र-प्रेम और राष्ट्रीयत्व की भावना ही राष्ट्र-निर्माण का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। राष्ट्र के प्रति प्रेम राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय विरासत के साथ आत्मसात् से आता है। स्वामी विवेकानन्द सदैव भारतीय-सांस्कृतिक स्वाभिमान एवं भारत के गौरवमयी अतीत से एकात्म होने, उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए अभिप्रेरित करते थे क्योंकि यही व्यक्ति और राष्ट्र की शक्ति है। किसी भी राष्ट्र की जड़ें उसके अतीत में होती है। राष्ट्र के संस्कार और राष्ट्र की लौकिक अभिव्यक्ति, उसकी शक्ति-सम्पन्नता राष्ट्र की सनातन सांस्कृतिक अक्षुण्ण विरासत पर आधारित होती है।[1] स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्र के इन मार्मिक भावपक्ष को आत्मसात् किया था, तभी तो उन्होंने व्यक्तियों में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय धरोहर के साथ राष्ट्र-निर्माण का मौलिक दर्शन प्रस्तुत किया। सुकर्ण स्वामी विवेकानन्द के इन विचारों से पूर्ण रूप से प्रभावित थे। स्वामी विवेकानन्द के सांस्कृतिक प्रेम की भावना को सुकर्ण ने इण्डोनेशियाई सांस्कृतिक सरोकारों के साथ एकात्म करते हुए राष्ट्र-निर्माण के शक्तिशाली स्रोत के रूप में अभिव्यक्त किया और इण्डोनेशियाई समाज में आत्मविश्वास और गौरव की भावना की पुनर्स्थापना की।[2]

इण्डोनेशियावासियों के अंतःकरण में स्वाभिमान, राष्ट्रवादी चिन्तन, और राष्ट्रीय जागरण की भावना ने इण्डेनेशियाई राष्ट्रवाद को जन्म दिया। इण्डोनेशियाई राष्ट्रवाद के उदय और प्रखर अभिव्यक्ति की दृष्टि से विचार करें तो डच-उपनिवेशकाल में व्याप्त सामाजिक दुर्व्यवस्था, अधिकारों का दमन एवं

1. Ram Dev Bharadwaj, 'Indian Culture: its impact on Indonesian History and Culture' (in Hindi), *Sanskriti*, New Delhi, Vol. XXVII, no.4,1985
2. Ram Dev Bharadwaj; *Sukarno and Indonesian Nationalism : 1927-1945*, M.Phil. Dissertation, School of International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, 1984, pp.9-12

शोषण के विरुद्ध सजगता, विदेशी आधिपत्य के विरुद्ध प्रतिकार की भावना ने राष्ट्रवाद की लहर पैदा की। औपनिवेशिक आधिपत्य के प्रति प्रतिरोध के भाव और राष्ट्रवाद के अंकुर इण्डोनेशियाई अतीत में निहित थे। डचों के विरुद्ध 1629 का सुल्तान अगुंग (Sultan Agung of Mataram) विद्रोह, 1750-'53 के मध्य बैन्तेन (Banten) राज्य विद्रोह और सन् 1800 से तो रक्तरञ्जित विद्रोहों की लम्बी शृंखला रही। लगभग 25 युद्ध हुए। जावा-युद्ध (The Java War or Diponegoro War : 1825-1830) और अचेह युद्ध (Aceh War : 1873-1914) राष्ट्रीय स्वाभिमान और एकता के अनूठे उदाहरण हैं। और इस राष्ट्रीय स्वाभिमान के पीछे है इण्डोनेशिया की सांस्कृतिक विरासत और परम्परा की अक्षुण्ण शक्ति।[1]

इण्डोनेशिया के राष्ट्रीय जागरण एवं राष्ट्रवाद के उदय में जावावासियों के देशप्रेम की अनूठी मिसाल मिलती है। एक प्रमुख जावानीज और इण्डोनेशियाई राष्ट्र-नायिका रादेन आजेंग कार्तिनी (Raden Ajeng Kartini : 1879-1904) ने अपनी किशोरावस्था में जो लिखा उसमें देशभक्ति, राष्ट्रीयता, संस्कृति व सभ्यता के प्रति सम्मान झलकता है। राष्ट्रीय जागरण की दिशा में महिलाओं में शिक्षा-विस्तार के लिए 1902 में जकार्ता में स्कूल खोलना, 1909 में *'पुत्री ही दिया'* पत्रिका, 1913 में *'स्वरा बनीता'* तथा 1916 में *स्वतन्त्र महिला* के नाम से पत्रिका-प्रकाशन की भूमिका अनूठी है।

'बुदि उतोमो' (Budi Utomo) (उत्तम बुद्धि) नामक सांस्कृतिक संगठन इण्डोनेशियाई कला, परम्पराओं की सुरक्षा एवं विकास, सार्वभौमिक मानवीय आदर्शों की स्थापना एवं राष्ट्रीय कल्याण के उद्देश्य से 20 मई, 1908 को गठित हुआ। प्रारम्भ में तो यह सांस्कृतिक संगठन था, परन्तु धीरे-धीरे राष्ट्रीय भावना के साथ-साथ राष्ट्रीय आन्दोलन का आधार बन गया।[2] बुदि उतोमो के सदस्य भारतीय विचारों से प्रभावित थे। उन्हें यह भी आशा थी कि भारतीय-राष्ट्रवादी रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941) और महात्मा गाँधी से उन्हें

1. 'The Pre nationalist Struggle Against Colonialism', *Indonesian Review*, Vol. I, no. 2, Feb-March 1951, p.132
2. Mohammad Hatta, 'Pergirakan Nasional 50 Tahun' (in Indonesian Language) *Star Weekly*, Jakarta, May 17, 1958, p.2 cited by Vishal Singh, 'The Rise of Indonesian political parties', *Journal of South-East Asian History, Singapur*, Vol.II, no.2, July 1961.

मार्गदर्शन मिलेगा।[1] विशेषतः रवीन्द्रनाथ ठाकुर के स्वशासित एवं शान्तिमय एशिया के विचारों ने बुदि उतोमो के सदस्यों को बहुत प्रभावित किया था।[2] इण्डोनेशिया में राष्ट्रीय भावना के जागरण की प्रक्रिया में 1909 में सरेकत इस्लाम (Sarekat Islam) का गठन हुआ।[3] यह प्रथम राजनैतिक संगठन था जिसने इण्डोनेशिया में राष्ट्रीय भावना के जागरण की प्रक्रिया में इस्लामिक धार्मिक भावनाओं के आधार पर जनजागरण किया व संगठन को मजबूत बनाया और धार्मिक एकता द्वारा राजनीतिक स्वतन्त्रता का लक्ष्य निर्धारित किया।[4] 1917 की सोवियत बोल्सेविक क्रान्ति से प्रभावित होकर इण्डोनेशियाई राष्ट्रवादियों के एक वर्ग ने वर्ग-संघर्ष की स्थिति अपनाते हुए साउमन (Semaun, approx. 1899-1971) तथा दार्सोनो (Darsono) के नेतृत्व में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इण्डोनेशिया (The Communist Party of Indonesia) का गठन किया। उपनिवेशवाद के विरुद्ध सभी वर्ग, मज़दूर, कर्मचारियों ने क्रान्तिकारी विचारधारा के माध्यम से स्वाधीनता के विचार को पल्लवित किया।[5]

इण्डोनेशियाई स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान जब सुकर्ण ने राष्ट्र-निर्माण की दिशा में नेतृत्व प्रदान करना आरम्भ किया तब इण्डोनेशियाई समाज कई विचारधाराओं एवं संगठनों में विभाजित था। इसका लाभ डच-सरकार को मिल रहा था। सुकर्ण ने इण्डोनेशियाई राष्ट्रवादी पार्टी का गठन किया और सभी को साथ लेकर चलने की भावना के साथ इण्डोनेशिया को नवीन सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाया। सुकर्ण की कार्य-योजनाओं में भारतीय प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। सुकर्ण की प्रारम्भिक राजनीतिक शिक्षा इस्लामिक नेता तथा सरेकत इस्लाम के प्रमुख चक्रोअमीनोतो के घर पर हुई। इस्लाम की शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी सुकर्ण ने इण्डोनेशिया को इस्लामी राष्ट्र नहीं बनने दिया।[6] उसने रुढ़िवादिता एवं कट्टरता की भी आलोचना की। *रामायण, महाभारत,*

1. Vlekke, op.cit.,p335
2. Payne Robert, *The revolt of Asia*, London, 1948,p.34
3. Romein, Jan, *Asian Century : A History of Modern Nationalism in Asia*, London, 1965,p.72
4. Vishal Singh, no.31, p.67 and also see, Kahin G.M., *Nationalism and Revolution in Indonesia*, New York, 1952,p.68
5. Adit, D.N., *The Birth and Growth of the Communist Party of Indonesia*, Djakarta, 1958, p.3
6. Ram Dev Bharadwaj; 'India-Indonesia Relations : Towards a New Era', *The Indonesian Quarterly*, Jakarta, Vol. XV, no.II, 1987

भगवद्गीता, वेदोपनिषदों से प्रभावित सुकर्ण ने कर्ण की वीरता और कर्तव्यनिष्ठा से प्रेरणा ली। सुकर्ण ने डच-उपनिवेशवादियों को सदैव कौरव तथा इण्डोनेशिया को पाण्डव के रूप में देखा। *भगवद्गीता* के प्रेरक प्रसंगों को सुकर्ण ने समय-समय पर इण्डोनेशियाई जनमानस में आत्मविश्वास-जागृति का स्रोत बनाया। स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, महर्षि अरविन्द, सरोजिनी नायडू, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि भारतीय-राष्ट्रवादी नेताओं से प्रेरणा लेकर इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय योगदान दिया।[1]

सुकर्ण ने महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर डच-सरकार के साथ असहयोग एवं अवज्ञा की नीति अपनायी। परन्तु जापानी-आधिपत्य काल में सुकर्ण ने असहयोग को त्यागकर सहयोग की नीति को अपनाया[2], उसका समर्थन किया। इस प्रकार कहा जा सकता है सुकर्ण पर गाँधी का प्रभाव तो था पर सुकर्ण ने गाँधी के विचारों को यथावत् स्वीकार नहीं किया। देश, काल और परिस्थिति को विचारकर सुकर्ण ने जब तक गाँधी जी की मान्यताओं की (इण्डोनेशिया के परिप्रेक्ष्य में) उपयोगिता रही, अपनाया तथा अनुपयोगी होने पर सुकर्ण ने उन्हें त्यागने में भी कोई हिचक नहीं की। सुकर्ण ने महात्मा गाँधी से राष्ट्रीय एकता, मानवता के प्रति प्रेम व मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना को ग्रहण किया।[3] जून, 1945 में सुकर्ण ने अपने भाषण में गाँधी जी के वाक्यों को दोहरते हुए कहा, "गाँधी जी कहते हैं कि मेरा मातृभूमि के प्रति प्रेम सम्पूर्ण मानवता के प्रति प्रेम का एक हिस्सा है। मैं एक देशभक्त हूँ क्योंकि मैं एक मानव हूँ"।[4] गाँधी जी ने 'मेरे सपनों का भारत' में लिखते हुए कहा कि मेरे लिए देशभक्ति और मानव-प्रेम में कोई अन्तर नहीं है। मैं देशप्रेमी हूँ क्योंकि मैं मानव हूँ।[5] सुकर्ण के अनुसार गाँधी जी का यही व्यापक प्रेम भारतीय राष्ट्रीय एकता

1. Ram Dev Bharadwaj, *Leadership and Indonesian Nationalism : A Study of Sukarno*, Ph.D. Thesis, Rani Durgavati University, Jabalpur, 1991.
2. Ram Dev Bharadwaj; 'Gandhi and Sukarno' *Gandhi Marg* (Journal of the Gandhi Peace Foundation), New Delhi. Vo. XI, no. IV, January-March, 1990, pp.477-481
3. Sukarno, *Indonesia Manggugat* (Indonesia Accuses) Edited and translated by Rogert K. Pagnet, London, 1975, p.57
4. Sukarno, *Lahirnja Pantjasila* (The Birth of panjasila, Djakarta, June, 1,1945), 1967, p.21
5. Gandhi, M.K.; *Satyagrah*, Congress Golden Jubilee Brochure, no.1,1935, pp.13-45

और अखण्डता के लिए माध्यम बना। गाँधी ने स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए 'कौमी एकता' पर बल दिया और कहा कि हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिख— सभी कौमों के लोगों को एक हो जाना चाहिये। मनमुटाव एवं परस्परिक झगड़ों को त्यागकर संगठित हो जाना चाहिये। गाँधी की धारणा थी कि 'हिंदू-मुस्लिम एकता' के बिना स्वाधीनता की प्राप्ति असम्भव है।[1] गाँधी जी की भाँति सुकर्ण ने भी डच-उपनिवेशवाद से स्वाधीनता प्राप्त के लिए वैचारिक एवं व्यावहारिक धरातल पर परस्परिक एकता की पहल की। सुकर्ण की मान्यता थी कि स्वाधीनता के संघर्ष में डचों को पराजित करने के लिए सभी विचारधाराओं के इण्डोनेशियावासियों को संगठित हो जाना चाहिये। उस समय इण्डोनेशिया का राष्ट्रीय आन्दोलन राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, इस्लामी मान्यताओं में विभाजित था जो एक दूसरे का विरोध करते थे। सुकर्ण ने तीनों विचारधाराओं के समूहों की एकता पर बल दिया और Nasionalis, Agama dan Komnnis अर्थात् 'नासाकोम' (NASAKOM) का विचार दिया। इस प्रकार गाँधी की 'कौमी एकता' और सुकर्ण के 'नासाकोम' का मर्मभाव एक ही है। यहाँ गाँधी का सुकर्ण पर प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। नासाकोम अर्थात् नेशनलिस्ट और कम्युनिस्ट की एकता। सन् 1926 में *'सुलुह इण्डोनेशिया मुडा'* (*Suluh Indonesia Muda*) में प्रकाशित अपने आलेख 'नेशनलिज़्म, इस्लाम एण्ड मार्क्सइज़्म' ('Nationalism, Islam, and Marxism'[2]) में सुकर्ण ने उन राष्ट्रवादियों की आलोचना की जो मार्क्सवादियों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए इनकार करते थे। सुकर्ण ने लिखा है कि राष्ट्रवादी इस बात को भूल गए हैं कि इण्डोनेशिया में मार्क्सवाद इण्डोनेशिया की स्वाधीनताप्राप्ति के लिए है। मार्क्सवादियों से विरोध का मतलब एक समान लक्ष्य रखनेवाले मित्र से शत्रुता करना है।[3] सुकर्ण ने कहा कि यद्यपि मार्क्सवाद के मूल में भौतिकता तथा इस्लाम के मूल में आध्यात्मिकता है, तथपि मुसलमानों को यह नहीं भूलना चाहिए कि ऐतिहासिक भौतिकवाद अतीत की समस्याओं के साथ-साथ भविष्य के स्वरूप

1. Gandhi, M.K., *The Hindu Muslim Unity*, Bombay, 1965, pp-13-45
2. *Nationalism, Islam and Marxism* (A translation and analysis of Soekarno's 1926 essay), by Sukarno, Translated by Ruth Thomas McVey Published by Modern Indonesia Project, Southeast Asia Program, Dept. of Asian Studies, Cornell University, 1970, ISBN 9780877630128
3. Penders C.L.M., *The Life and Times of Sukarno*, London, 1974, p.11

को भी उजागर करता है। हमें ध्यान रहे कि पूँजीवाद मार्क्सवाद एवं इस्लाम— दोनों का ही शत्रु है। सच्चा इस्लाम मार्क्सवाद की तरह है जो धनसंचय का विरोध करता है। इस प्रकार सुकर्ण ने इस्लाम और मार्क्सवाद के मध्य व्याप्त मतभेदों को समाप्त करने का प्रयास किया।[1] गाँधी की 'कौमी एकता' के विचारों की भाँति सुकर्ण द्वारा राष्ट्रवादियों, इस्लाम तथा मार्क्सवादियों के मध्य की दूरियों एवं टकरावों को समाप्त कर सभी में राष्ट्रवादी भावना का संचार करना उसका अनूठा प्रयास था।[2] सुकर्ण द्वारा एकता का प्रयास उसकी मात्र राजनीतिक लाभ की चेष्टा ही नहीं थी, अपितु उसकी अपनी वैचारिक स्थिति थी। इस संबंध में उसने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि 'वर्ष 1926 मेरे जीवन के लिए (तीन आयामों में) परिपक्वता ग्रहण करने का समय था। राजनीतिक रूप से सुकर्ण एक राष्ट्रवादी था, धार्मिक रूप से ईश्वर में विश्वास करनेवाला एवं वैचारिक रूप से समाजवादी। परन्तु यह ध्यान रहे कि सुकर्ण समाजवादी था न कि कम्युनिस्ट।[3] इस प्रकार तीनों विचारधाराओं में सामञ्जस्य स्थापित करने की धारणा राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय जागरण की भावना से प्रेरित थी। वैचारिक एवं राजनीतिक धरातल पर राष्ट्रवादियों, मार्क्सवादियों और इस्लामियों को एक करने का प्रयास इण्डोनेशिया के राजनीतिक चिन्तन में सुकर्ण का व्यक्तिगत योगदान कहा जा सकता है जो आज भी इण्डोनेशियाई एकता के रूप में स्थापित है तथा राष्ट्रनिर्माण की सुदृढ़ महत्त्वाकांक्षा के साथ वर्तमान समाज, राजनीति एवं नेतृत्व के लिए महत्त्वपूर्ण आधार बना हुआ है।

सुकर्ण, स्वामी विवेकानन्द के इन विचारों से प्रभावित थे जिसमें विवेकानन्द ने कहा था कि हमारे भाग्य की रेखाएँ हमारे हाथों में हैं। भविष्य का निर्माण हमें स्वयं करना है। हमें सदैव अपनी झोली फैलाए नहीं रहना चाहिये। इसी सन्दर्भ में लोकमान्य तिलक के विचारों का उल्लेख करते हुए सुकर्ण ने स्मरण दिलाया कि भारतीय राष्ट्रवादी नेता लोकमान्य तिलक ने कहा है कि हमारा नारा असहयोग का होना चाहिये। अधिक सही रूप में इसका अर्थ स्वयं की मदद करना और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना है।[4] सन् 1928 में युवाओं के साथ

1. *The Life and Times of Sukarno*, p.11
2. The Concept of NASAKOM has been developed in form of Guided Democracy in Indonesia
3. Sukarno, op.cit., p.75
4. *Ibid*, p.61

सुकर्ण ने एक भाषा, एक देश, एक राष्ट्र की शपथ ली और आह्वान किया कि इण्डोनेशिया की स्वाधीनता सिर्फ़ शपथ लेने से कल सुबह ही नहीं आयेगी। स्वाधीनता की रेखाएँ हमारे हाथ में हैं। रेखाओं के अनुरूप स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए हमें एकजुट होकर औपनिवेशिक सरकार को उखाड़ फेंकना होगा। वे कभी भी स्वेच्छा से हमारी झोली में स्वाधीनता नहीं डालेंगे। हमें संघर्ष करना होगा, अपना मार्ग स्वयं निर्धारित करना होगा। इसके लिए सुकर्ण ने पुनः भारतीय कर्मयोगी विवेकानन्द और अन्य क्रान्तिकारी नेताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इण्डोनेशियाई स्वाधीनता, जनमानस को संगठित करने और युवाओं के संगठन की संकल्प-शक्ति के प्रयोग करने से आयेगी। स्वाधीनता के लिए समर्पण, त्याग और बलिदान आवश्यक है।[1] सुकर्ण ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के उन विचारों से प्रेरणा लेने के लिए कहा, जिसमें उन्होंने स्वाधीनता के लिए कहा था कि स्वाधीनता उस देवी के समान है जिसे अपनी उपासना में अनन्य भक्ति, अत्यधिक एवं अपनी इच्छाओं से स्वप्रेरित पूर्ण समर्पित राष्ट्रभक्तों की आवश्यकता है।[2] सुकर्ण द्वारा संचालित स्वाधीनता-आन्दोलन के लिए सक्रिय कार्यक्रमों के अंतर्गत जब संगठन की शक्ति का विस्तार हुआ तथा इण्डोनेशियन राष्ट्रीय बैंक तथा सहकारिता आरम्भ करने के निर्णय लिया तब डच सरकार हिलने लगी थी। परिणामतः डच सरकार ने सुकर्ण को बन्दी बना लिया। ऐसे समय सुकर्ण ने *भगवद्गीता* से प्रेरणा लेते हुए डच सरकार को चेतावनी दी और कहा, "हमें बमों एवं विस्फोटक पदार्थों का उपयोग करने के लिये दोषी ठहराया है जैसे कि मानो आध्यात्मिक स्तर पर कोई शक्तिशाली हथियार ही न बना हो। वे समझते हैं कि हमने अपनी आध्यात्मिक शक्ति की अनन्त अपराजित ताकत को समझा ही न हो।" सुकर्ण ने कहा कि "हम पवित्र भगवद्गीता की शक्ति को भूले नहीं हैं। हमारे पास वह आध्यात्मिक शक्ति है,[3] जिसे 'आग जला नहीं सकती, पानी भिगा नहीं सकता, गर्म हवाएँ झुलसा नहीं सकतीं... यह वह शक्ति है जो अपराजित है, सम्पूर्ण है, सर्वव्यापी एवं सनातन है।[4] सुकर्ण ने कहा

1. Bhardwaj, op.cit., pp.48-50
2. Sukarno, op.cit., p.67
3. "Weapons cannot cut it nor fire burn it, water cannot wet it nor can wind dry it" *The Bhagavadgita*, Chapter 2.23, "For this soul is incapable of cut, it is proof against fire, impervious to water and un-driable as well. This soul is eternal, omnipresent, immovable, constant and everlasting; *The Bhagavadgita*, Chapter 2.24.
4. Sukarno, op.cit., p.76

कि बमों और डायनामाइटों की बनावटी क्षणिक शक्ति प्राप्त करना हमारा लक्ष्य नहीं है। हम तो व्यक्तियों की 'आत्मिक शक्ति का संगठन' चाहते हैं। सुकर्ण ने ज़ोरदार शब्दों में कहा कि एक बार आत्मिक शक्ति अनुशासन से अनुबन्धित हो जाए, तो उससे उठी ज्वालाओं को कोई ताकत नहीं बुझा सकती। सुकर्ण, सरोजिनी नायडू के भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के भाषण के उस कथन से बहुत प्रभावित थे जिसमें उन्होंने कहा था कि "कौन उन लोगों को बन्दी बना सकता है जिनकी आत्माओं को जंजीरों से जकड़ा नहीं जा सकता; और कौन उन लोगों को मार सक्ता है जिनकी आत्मा अमर हो।"[1] इसका मतलब यही निकलता है कि राष्ट्रभक्तों की आत्माओं को बन्दी नहीं बनाया जा सकता। उनके शरीर को जंजीरों में तो जकड़ा जा सकता है, किन्तु उनकी अंतरात्मा के स्वातन्त्र्य को कोई नहीं छू सकता। सुकर्ण ने कहा कि स्वतन्त्रता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए (वर्ग-संघर्ष की आवश्यकता नहीं जैसा कि श्रमिक-आन्दोलनों में होता है), अपितु राष्ट्रीय जागृति और राष्ट्रीयता की भावना की आवश्यकता है। राष्ट्रीय जागृति में ही राष्ट्रीय शक्ति निहित है। इसी कारण इण्डोनेशियाई राष्ट्रवाद को राष्ट्रीयता द्वारा पाला-पोसा है।[2] सुकर्ण ने कहा कि त्याग और बलिदान पर आधारित हमारा राष्ट्रवाद सकारात्मक राष्ट्रवाद होगा जिसके द्वारा इण्डोनेशिया के लोग ऐसी स्वतन्त्रता का सृजन करेंगे जिसमें भौतिक विकास और आध्यात्मिकता में पूर्ण रूप से सामञ्जस्य स्थापित होगा।[3] सुकर्ण का भौतिक विकास और आध्यात्मिकता में सामञ्जस्य का विचार स्वामी विवेकानन्द के उन विचारों से प्रभावित है जिसमें स्वामी जी ने कहा था कि पश्चिम का भौतिक विज्ञान विकास एवं पूर्व का आध्यात्मिक दर्शन बन्धुत्व और सामञ्जस्य का निर्माण करेंगे और इस समन्वय से ही पृथ्वी पर स्वर्ग का अवतरण होगा। सुकर्ण ने सकारात्मक राष्ट्रवाद के स्वरूप को श्रीअरविन्द द्वारा दी गई राष्ट्रवादिता की व्यवस्था द्वारा समझाते हुए कहा है कि जैसा कि श्रीअरविन्द ने कहा है कि "सकारात्मक राष्ट्रवादिता स्वयं अल्लाह का स्वरूप है।" ऐसे ही राष्ट्रवाद के अंतर्गत इण्डोनेशिया के लोग भविष्य में एक तपता सूर्य देखेंगे और ऐसी ही राष्ट्रवादिता के अंतर्गत हज़ारों लोग अपने को राष्ट्र के प्रति ख़ुशी से न्योछावर कर देंगे।[4]

1. Sukarno, op.cit., p.77
2. *Ibid*, p.78
3. *Ibid*
4. *Ibid*, p.70

ये सब व्याख्याएँ, विश्लेषण एवं घटनाएँ यह प्रमाणित करती हैं कि उस समय इण्डोनेशिया में राष्ट्रवाद की भावना अपने पूर्ण उत्कर्ष पर थी और इस प्रज्ज्वलित राष्ट्रवादी भावना का स्रोत एवं आधार कम्युनिस्ट विचारधारा, धार्मिक मान्यताओं अथवा इण्डोनेशिया के बुद्धिजीवियों तक ही सीमित नहीं था अपितु यह आम जनता की प्राकृतिक स्वाभाविक राष्ट्रवादी भावना का अभिव्यक्त स्वरूप था।[1] वास्तव में इस प्रकार का आन्दोलन जो इण्डोनेशिया (सम्पूर्ण एशिया) की धरती पर एक छोटी-सी चिनगारी के रूप में उभरा था, वह चन्द आधुनिकतावादियों का ही नहीं अपितु संसार के सभी पिछड़े और शोषित लोगों का था जिनके लिए स्वाधीनता की एक किरण ज़िन्दगी से भी अधिक व्यापक थी। सुकर्ण ने कहा है कि "सूर्य इसलिए नहीं उगता कि मुर्गा बाँग देता है, बल्कि मुर्गा बाँग इसलिए देता है कि सूर्य उग रहा होता है।"[2] इस उपमा द्वारा सुकर्ण ने व्यक्त करना चाहा कि राष्ट्रवादियों की अन्तरात्मा की प्रखर अभिव्यक्ति आन्दोलनों के माध्यम से इसलिए और अधिक सक्रिय हो गई थी क्योंकि स्वतन्त्रतारूपी सूर्य का उदय होने ही वाला था जो उनका लक्ष्य था।

'पञ्चसिला' : विवेकानन्द और इण्डोनेशियाई राष्ट्र–निर्माण

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान सुकर्ण ने 01 जून, 1945 को BPUPKI – Badan Penyelidin Usaha Persiapan Kemerdekaan Indonesia: (The Investigation Committee for Preparation of Indonesian Independence) के समक्ष इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण के लिए पाँच दार्शनिक आधारभूत सिद्धान्तों को प्रतिपादन किया[3] जिन्हें 'पञ्चसिला' (Pancasila) के नाम से जाना गया। सुकर्ण का यह भाषण उसके जीवन की और विचारों की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। पञ्चसिला इण्डोनेशियाई राष्ट्र के दार्शनिक आचार के साथ-साथ राष्ट्रीय लक्ष्य भी है। यह इण्डोनेशियाई संस्कृति, सभ्यता एवं मान्यताओं का सम्मिश्रण व स्वाधीनता की संक्रमणकालीन सामाजिक व्यवस्था एवं अंतर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करता है। पञ्चसिला लोकतान्त्रिक सिद्धान्त है, स्वतन्त्र इण्डोनेशिया की बुनियाद एवं समन्वय की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है जो सुकर्ण के

1. Romein, op.cit., p.234
2. *Ibid*
3. *Indonesian Revolution : Basic Document and the Idea of Guided Democracy*, Jakarta, 1980

अंतरात्मा की गहराइयों में निहित था एवं एकाकार हो चुका था।[1] सुकर्ण के पञ्चसिला सिद्धान्तों पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। राष्ट्रवाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद अथवा मानवतावाद, प्रजातन्त्र, सामाजिक न्याय, और ईश्वर में विश्वास स्वतन्त्र इण्डोनेशियाई राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला है। सुकर्ण असाधारण व्यक्तित्व से सम्पन्न थे। उनमें युगचेतना को पहचानने और जनसाधारण को नेतृत्व प्रदान करने की प्रचुर क्षमता विद्यमान थी। सुकर्ण ने इण्डोनेशियाई स्वाधीनता को 'स्वर्णिम सेतु' की संज्ञा दी[2] और कहा कि इस सेतु के दूसरी ओर हम सब एक नये न्यायपूर्ण, समृद्ध, फलते-फूलते इण्डोनेशियाई समाज का निर्माण करेंगे। राष्ट्रीय स्वाधीनता और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के प्रति सुकर्ण का पूरा विश्वास था कि 'पञ्चसिला' एक ऐसा आधार प्रस्तुत करेगा जिससे सभी इण्डोनेशियाई सामूहिक रूप से मिलकर राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न हो जाएँगे।

1. पहला आधारभूत सिद्धान्त : राष्ट्रवाद ('Kebangsaan Indonesia' (Indonesian Nationality) an emphasis on Nationalism : राष्ट्रवाद, राष्ट्र की शक्ति है, राष्ट्रवाद पर आधारित राष्ट्र चिरस्थायी एवं अनन्तकाल तक नागरिकों को संरक्षण और सुरक्षा प्रदान करता है। इण्डोनेशियाई एकता और राष्ट्रवाद की अवधारणा के प्रतीक के रूप में सुकर्ण द्वारा बरगद का पेड़ (The Banyan Tree) को रखा गया है जिसकी असंख्य शाखाएँ-पत्तियाँ एक-दूसरे की शक्ति हैं। सुकर्ण की स्पष्ट धारणा थी कि इण्डोनेशिया एक स्वतन्त्र राष्ट्रवादी राष्ट्र-राज्य होगा और इण्डोनेशियाई राष्ट्रवाद संकुचित अथवा संकीर्ण नहीं होगा अपितु व्यापक और सभी को समाहित करनेवाला राष्ट्र होगा। सुकर्ण की धारणा थी कि हमें ऐसी राष्ट्रवादिता स्वीकार नहीं है जो विभक्त हो। हमें तो संयुक्त राष्ट्रवाद चाहिए, एकात्म राष्ट्रवाद चाहिए, एकरूपता में राष्ट्र के दर्शन हो, ऐसा राष्ट्रवाद चाहिये। जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में सुकर्ण की राष्ट्रवादी अवधारणा मध्य-पूर्व प्राचीन भाषाओं, सभ्यताओं के फ्रांसीसी विशेषज्ञ, दार्शनिक और लेखक अर्नेस्ट रेनन (Joseph Ernest

1. Wedioningrat Radiman, *Cited from the introduction given in Lahirnja Patijasila*, Djakarta, June 1, 1945.
2. Sukarno, *Lahirnja Pantjasila* (The Birth of Panjasila), The basic of the Republic of Indonesia, introductory lecture delivered in Istana Nagara, Djakarta, June 1, 1945

Renan : 1823-1892) एवं ओटो वाऊर यामिन आदि से प्रमाणित थी। रेनन ने कहा था कि 'nation is the desire to be united तथा ओट्रो के मान्यता थी कि 'The nation is a unity of conduct which comes in to being because of unity of destiny'. सुकर्ण ने स्पष्ट किया कि इस प्रकार की राष्ट्र और राष्ट्रवाद की धारणाएँ सिर्फ़ मनुष्यों का विचार करती हैं। मनुष्य के चरित्र, मनुष्य की भावनाओं तथा मनुष्य और उस भूमि के साथ संबंधों पर, जिसमें उसने जन्म लिया है, विचार नहीं करतीं। अतः सुकर्ण ने की० बागुस हाजी कुसोमों (Ki Bagoes Hadikoesoemo : 1890-1954) की व्यक्ति-व्यक्ति और व्यक्ति और स्थान की परस्पर एकता की विचारधारा को राष्ट्रवाद का आधार बनाया।[1] इस आधार पर विश्लेषित करते हुए सुकर्ण ने कहा कि एक छोटा बच्चा भी विश्व के मानचित्र को देखकर इण्डोनेशियाई द्वीपसमूह की एकता के स्वरूप को स्पष्ट रूप से बता सकता है। मानचित्र पर विभिन्न द्वीपों की परस्पर एकता स्पष्ट दिखाई देती है जो एक ओर दो बड़े महासागरों– हिंद महासागर और प्रशान्त महासागर के मध्य तथा दूसरी ओर दो बड़े महाद्वीपों–एशिया एवं आस्ट्रेलिया के मध्य स्थित है। विभिन्न द्वीपों के मध्य जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, सुलावेसी, लेसर-सुण्डा (Lesser Sunda), मलुकू (Maluku) तथा अनेक छोटे-छोटे द्वीपों की परस्पर एकता ही इण्डोनेशियाई राष्ट्र है।

सुकर्ण ने सचेत किया कि इण्डोनेशियाई राष्ट्रवाद को संकीर्ण दृष्टि से नहीं समझना चाहिए। इण्डोनेशियाई राष्ट्रवाद सभी प्रजातीय भेदभावों से ऊपर उठकर भू-राजनौतिक दृष्टि से इण्डोनेशिया में रहनेवाले सभी निवासियों के सहयोग और परस्पर समन्वय का परिणाम है। इण्डोनेशिया हम सभी का राष्ट्र है। न सिर्फ अकेला जावा, अकेला सुमात्रा, अकेला मलुकू, अकेला बोर्नियो, अकेला सुलावेसी और अकेला अम्बोन (Ambon), अपितु सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से इण्डोनेशिया सम्पूर्ण द्वीपों का समूह है। दो महासमुद्रों तथा दो महाद्वीपों के मध्य एक इकाई है और वह है इण्डोनेशिया।[2] इस प्रकार सुकर्ण ने पुनः व्यक्ति और स्थान के मध्य, व्यक्ति और पर्यावरण के मध्य, व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य अंतर्संबंधों की एकता का स्मरण कराया और सभी द्वीपों को, व्यक्तियों को एकता के सूत्र में बाँधने का मंत्र दिया। सुकर्ण ने स्पष्ट किया कि मिनांगकाबाऊ

1. *Lahirnja Pantjasila*
2. *Ibid*, p.19

(Minangkabau) (सुमात्रा क्षेत्र) में रहनेवाले व्यक्ति अपने को एक परिवार की तरह अभुनव करते है, परन्तु मिनांगकाबाऊ अकेले एक एकता नहीं है। यह सिर्फ़ इण्डोनेशियाई एकता का एक छोटा-सा हिस्सा है। जावा में रहनेवाले लोग इण्डोनेशियाई एकता के हिस्सा हैं। समग्रता में ही उनकी शक्ति में वृद्धि होती है। और इस राष्ट्रीय एकता तथा शक्ति का आधार है श्रीविजय एवं मजापहित साम्राज्य की वास्तविकता और उसका परिमण्डल।[1]

सुकर्ण ने स्पष्ट किया कि किसी भी व्यक्ति को ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि सभी स्वतन्त्र देश राष्ट्र-राज्य है। न तो पर्सिया, अथवा बावारिया (Bavaria), न ही सेक्सोनी (Saxony) राष्ट्र-राज्य है अपितु सम्पूर्ण जर्मनी एक राष्ट्र-राज्य है। इसी प्रकार न तो वेनिश (Venice), और न ही लोम्बार्डी (Lombardy) का छोटा क्षेत्र राष्ट्र है अपितु सम्पूर्ण इटली, सम्पूर्ण मेडीटेरियन प्रायद्वीप ही राष्ट्र-राज्य है। इसी प्रकार न तो बंगाल, न पंजाब, न ही बिहार और उड़ीसा, अपितु सम्पूर्ण त्रिकोण ही भारत है जो राष्ट्र-राज्य होना चाहिये। इण्डोनेशिया को अतीत काल में दो बार अर्थात् श्रीविजय और मजापहित साम्राज्य-काल में राष्ट्र-राज्य का अनुभव प्राप्त है। इस प्रकार एक सामान्य सादृश्यता अपनाते हुए सुकर्ण ने विश्लेषित किया और तर्क दिया कि इण्डोनेशियाई राष्ट्रवाद ने इण्डोनेशियाई राष्ट्र का आधार निर्मित किया है और स्पष्ट किया कि न तो जावानीय राष्ट्रवाद, न सुमात्रन राष्ट्रवाद, न बोर्नियो का राष्ट्रवाद, और न ही सुलावेसी अथवा बाली का राष्ट्रवाद, अपितु समग्र रूप से ये सभी द्वीप मिलकर इण्डोनेशियाई राष्ट्र-राज्य का आधार निर्मित करते हैं। सुकर्ण ने राष्ट्रवाद की यह प्रेरणा स्वामी विवेकानन्द से ग्रहण की। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि स्वामी विवेकानन्द उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने मुझे एकता, समन्वय और सादृश्यता के साथ शक्तिशाली बनने की प्रेरणा दी। स्वामी विवेकानन्द के अध्ययन के पश्चात् धीरे-धीरे मैंने अपने को पक्के इरादे के राष्ट्रवादी के रूप में परिवर्तित होता हुआ पाया।[2]

2. दूसरा आधारभूत सिद्धान्त : अंतर्राष्ट्रीयतावाद/मानवतावाद : Internasionalism (Internationalism), an emphasis about justice

1. Ram Dev Bharadwaj, *'India, Sukarno and Modern Indonesia'*, Madhya Bharati, Vol. LVII, 2006, pp.3039. And also refers to Sukarno, Laharinja Pantja Sila
2. Sukarno, op.cit., An Autobiography, p.75

and Humanity : मानवता के प्रतीक के रूप में जंजीर की शृंखला (The Chain) को रखा है जो इस बात पर महत्त्व देता है कि इण्डोनेशिया निवासी किसी व्यक्ति का व्यक्ति के द्वारा अथवा एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के द्वारा भौतिक और आध्यात्मिक प्रभाव अथवा हस्तक्षेप सहन नहीं करता है। सुकर्ण, स्वामी विवेकानन्द के विश्वबन्धुत्व अथवा अंतर्राष्ट्रीयता/मानवतावादी विचारों से सर्वाधिक प्रभावित थे। स्वामी विवेकानन्द का कहना था अंतर्राष्ट्रीयता, विश्व-बन्धुत्वता साम्य के सिद्धान्त पर आधारित है। परन्तु राष्ट्रों की स्वार्थपरता तथा एकाधिकारवादी प्रवृत्ति अंतर्राष्ट्रीयतावाद/मानवतावाद के लक्ष्य की स्थापना में बाधक है। राष्ट्रों को अपने हृदय में साम्य और बन्धुत्व का अनुभव करना चाहिए तभी एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के प्रति प्रेम और सहानुभूति रख सकता है, परस्पर दूरियाँ और भेदभाव दूर कर सकता है। अंतर्राष्ट्रीयता का यथार्थ यही है।[1] विवेकानन्द की धारणा थी कि कोई राष्ट्र एकाकी नहीं है, सर्वोच्च नहीं है, सर्वशक्तिमान नहीं है, अपितु एक-दूसरे से गुंथे हुए हैं। सभी राष्ट्र परस्पर एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते है और सीखते भी हैं। पौर्वात्य राष्ट्रों को पाश्चात्य राष्ट्रों से और पाश्चात्य राष्ट्रों को पौर्वात्य राष्ट्रों से सीखना चाहिए, यही अंतर्राष्ट्रीयता/मानवता का सकारात्मक पक्ष है।

सुकर्ण की धारणा थी कि यद्यपि हम राष्ट्रवाद के समर्थक हैं तथापि हमारा राष्ट्रवाद अलगाव का राष्ट्रवाद नहीं है न ही उग्र राष्ट्रीयतावाला राष्ट्रवाद जैसा कि यूरोप में जर्मनी कहता है कि दुनिया में हमारे बराबर कोई महान् नहीं है जिसके व्यक्ति आर्य प्रजाति के हैं और महामानव हैं।[2] हम, इण्डोनेशियावासियों को ऐसी धारणा नहीं बनानी है कि सिर्फ इण्डोनेशिया के लोग ही आदर्श हैं, सम्पूर्ण हैं, और कुलीन भी हैं; अपितु ऐसी धारणा बनानी है कि इण्डोनेशियाई लोग दुनिया के दूसरे व्यक्तियों को भी महत्त्व देते हैं। हमें विश्व की एकता तथा भाईचारे की ओर उन्मुख होना चाहिये। पूरे विश्व को एक परिवार की तरह समझना चाहिये।[3] सुकर्ण का यह विचार विवेकानन्द के भाषणों और भारतीय चिन्तन में अभिव्यक्त **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के विचारों से अनुप्रेरित है जिसमें

1. *Vivekananda Sahitya Sanchyana*, Vol. III, Advaiya Ashrama, Calcutta, 1985, p.110
2. Sukarno, 'Exposition of peri Khemanusiaan', lecture delivered in Istana Nagara, Djakarta, 22 July, 1958
3. *Ibid*

भारतीय मनीषियों ने सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखा है। सुकर्ण ने 'पेरी केमानुसियान' (Peri Kemanusiaan) अर्थात् मानवतावाद का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। 'पेरी केमानुसियान' के सिद्धान्त की व्यापक व्याख्या करते हुए सुकर्ण ने कहा कि 'केमानुसियान' का मतलब मानवता है। मनुष्य जाति में मानवता की भावना अनादिकाल से विद्यमान रही है। अनादिकाल से ही मनुष्य जाति का विकास मानवता की भावना के कारण ही हुआ है। इसी मानवता के कारण संस्कृतियों का विकास हुआ और प्राकृतिक नियमों का संरक्षण सम्भव हुआ है।[1] सुकर्ण अपने भाषणों में प्रायः हिंदुइज़्म (हिंदुत्व) की स्वयंसिद्ध सूक्ति **'सोऽहम्'** का उल्लेख एवं विश्लेषण करते थे। सुकर्ण की धारणा थी कि मानवतावाद की व्याख्या **'तत्त्वमसि'**[2] (Tat twam asi) पर आधारित है। इस का अर्थ है कि **'अहं तत्त्वमसि'** (मैं वह हूँ और वह मैं हूँ, I am he and he is I) इस प्रकार सैद्धान्तिक रूप से 'वह' एवं 'मैं' के अन्दर कोई भेद नहीं।[3] इसी प्रकार व्यक्ति और प्रकृति में भी कोई भेद नहीं। संसार में जो भी प्राकृतिक है, वह सब एक हैं और सभी परस्पर आबद्ध हैं। सुकर्ण ने *भगवद्गीता* के कृष्णार्जुन-संवाद के माध्यम से भी अंतर्राष्ट्रीयतावाद/मानवतावाद की एकरूपता-संबंधी भाव को अभिव्यक्त कर स्थापित किया। सुकर्ण ने उदाहरण दिया कि महाभारत-युद्ध के दौरान अर्जुन ने कृष्ण से पूछा कि "आप कौन हैं और कहाँ हैं ?" अपने बारे में बताइये। कृष्ण के रूप में आपका शरीर तो है परन्तु वास्तव में आप कहाँ और कौन हैं ? कृष्ण ने उत्तर दिया कि 'मैं सर्वव्यापी हूँ, तुम्हारे अन्दर हूँ, मैं बर्फ में हूँ, पर्वतों मे हूँ, समुद्रों में हूँ, समुद्री-लहरों में हूँ; मैं अग्नि हूँ, मैं अग्नि की ऊष्मा हूँ, मैं चन्द्रमा हूँ, मैं वायुमण्डल में बादल हूँ, मैं पूजा किए जानेवाले पत्थर में हूँ, मैं पवित्र शब्द 'ॐ' हूँ, (हिंदू और बौद्ध लोगों द्वारा पूजा के समय उच्चारण किए जानेवाला शब्द ओम्), मैं मनुष्यों की भावना हूँ; मेरा जन्म नहीं हुआ और न ही मैं मरूँगा; मैं सभी का प्रारम्भ (आदि) हूँ; मैं मुस्कान हूँ, मैं सभी का लक्ष्य हूँ, मैं फूलों की सुगन्ध हूँ, शब्दों के द्वारा मेरी व्याख्या नहीं की जा सकती।' तब अर्जुन ने पुनः प्रश्न किया, कि क्या मैं आपको वास्तविकता में देख सकता हूँ ? तब कृष्ण ने कहा कि हाँ, तुम मुझे यथातथ्यस्वरूप में देख सकते हो। परन्तु, जब तक मैं तुममें इतनी

1. Ram Dev Bharadwaj, *'Sukarno and Indonesian Nationalism'*, Lahul Publication, New Delhi 1979, p.204
2. *छांदोग्योपनिषद्*, 6.8.7
3. Sukarno, Lahirnja Pantjasila

शक्ति और दृष्टि निर्मित न कर दूँ कि तुम मुझे देख सको, तुम सहन नहीं कर पाओगे।[1]

सुकर्ण ने 'पञ्चसिला' में इस प्रसंग का वर्णन करते हुए कहा है कि जब कृष्ण ने अर्जुन को शक्ति-सम्पन्न कर दिया, तब कृष्ण ने स्वयं को रूपान्तरित कर विराट् स्वरूप में अवतरित किया और कहा, "अर्जुन ! देखो यह मैं हूँ।" अर्जुन ने जो देखा वह कोई सामान्य चित्रण नहीं है। अर्जुन ने देखा कि हज़ारों सूर्य का प्रकाश एकसाथ उद्दीप्त हो रहा है, जैसे सभी नरपिशाच और जिन्न एक स्थान पर एकत्र हो गए हों। उसने देखा कि पूर्व से पश्चिम की ओर तथा उत्तर से दक्षिण की ओर अग्नि प्रदीप्तमान है। उसने देखा कि प्रचण्ड तूफ़ान अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ चल रहा है, पेड़ कलरव कर रहे हैं, चारों ओर समुद्र-ही-समुद्र है। कृष्ण ने कहा कि यह मैं हूँ। इस प्रकार महाभारत के रणक्षेत्र में कृष्ण ने अर्जुन को जो शिक्षा दी, वह सुकर्ण ने अनुकरण की। कृष्ण ने तो अर्जुन को अपने कर्तव्य का पालन करने का आह्वान किया और कहा कि जो तुम्हारे शत्रु हैं, उनको मारो, विचलित न हो। परन्तु सुकर्ण ने *भगवद्गीता* के इस आख्यान से अद्वैतवाद का सबक ग्रहण किया। सुकर्ण ने कहा कि यह अद्वैत है, यह संसार में अस्तित्व में व्याप्त सभी वस्तुओं, पदार्थों की एकता का विचार, सिद्धान्त है। यह मनुष्यों के विचारों की एकता, मनुष्य द्वारा किए गए कर्मों की एकता का सिद्धान्त है। यही

1. *Ibid*. and also refer. *The Bhagavadgita* as Shri Bhagavan Krishna said) I am the Universal self started – the heart of all beings, so I alone am the beginning, the middle and also the end of all beings. I am Visnu among the twelve sons of Aditi, and radiant sun among the luminaries. I am Glow of the Maruts (the forty-nine wind-gods) and the moon among the star. Among the Vedas, I am Samveda, I am the mind, I am the consciousness, I am the Siva, I am the lord riches(kubera) I am the god of fire, Among the word, I am the sacred syllable "OM", I am knowledge of the soul; See, *The Bhagavadgita* Chapter X/2,4,5,19,20,22,25,32,36. Sri Bhagavan Krishna said Arjuna, You cannot see me with these human eyes of yours, therefore, I vouchsafe to you the divine eye. With this you behold my divine power of yoga. Arjuna saw the supreme Deity possessing many mouths and eyes, presenting many a wonderful sight, decked with many divine ornaments, wearing many uplifted weapons, wearing divine garlands and vestments, anointed all over with divine sandal pastes full of all wonders, infinite and having faces on all side. If there be the effulgence of a thousand suns bursting forth all at once in the heavens, even that would hardly approach the spendour of the mighty Lord. *The Bhagavadgita,* Chapter XI.6,8,10, 11-12.

अद्वैतवाद है। यही हिंदू धर्म की शिक्षा है। जो व्यक्ति इस अद्वैत को योग द्वारा अभ्यास करते हैं, एक निश्चित अवस्था में इस एकता के साथ तादात्म्य-भाव स्थापित कर लेते हैं।

इस प्रकार सुकर्ण द्वारा मानवता के सिद्धान्त को, जो अद्वैत दर्शन पर आधारित है, स्वामी विवेकानन्द के गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस की एक घटना से भी समझाने का प्रयास किया। सुकर्ण ने कहा कि एक दिन रामकृष्ण, जो स्वामी विवेकानन्द के गुरु थे, बरामदे में बैठे थे। बारिश हो रही थी। बरामदे में बैठे होने के कारण वे बारिश से गीले नहीं हो रहे थे। तभी रामकृष्ण ने देखा कि एक व्यक्ति बारिश में भीगा हुआ जा रहा है। उस व्यक्ति को देखकर रामकृष्ण परमहंस को ऐसा लगा कि वे स्वयं ठण्ढ से काँप रहे हैं। कोई दूसरा व्यक्ति बारिश में भीग रहा था परन्तु रामकृष्ण उसे देखकर ठण्ढ से काँप रहे थे। सुकर्ण ने कहा कि एकात्मता का यह भाव, एकरूपता का यह स्वरूप व्यक्ति, बारिश और रामकृष्ण के मध्य अद्वैत का उत्कृष्ट उदाहरण है। अद्वैत का यही विचार **'तत्त्वमसि'** (Tat twam asi) (I am he and he is I) है।

सुकर्ण का कहना था कि सभी धर्म हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध मूलतः मानवता के लिए ही हैं। इसलिए इण्डोनेशिया को मानवता के सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए, और मानवता को इण्डोनेशियाई राष्ट्र का आधारभूत सिद्धान्त बनाना चाहिये। इसी विचार को विस्तार देते हुए सुकर्ण ने इण्डोनेशियाई राष्ट्रीय प्रतीक-चिह्न गरुड़ के चारों ओर राष्ट्रीय ध्येय वाक्य **'भिन्नेक तुंग्गल इक'** (Bhinneka Tunggal Ika) (भिन्नता परन्तु एकत्व unity in diversity) को अंगीकार किया है।

सुकर्ण की स्पष्ट धारणा थी कि मानवता के बिना राष्ट्रवाद का कोई अर्थ नहीं। सुकर्ण ने राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद/मानवतावाद की एक-दूसरे से निकटता को विश्लेषित किया कि अंतर्राष्ट्रीयतावाद तब तक फलफूल नहीं सकता जब तक वह राष्ट्रवाद में गहराई से सुस्थिर न हो। और इसी प्रकार राष्ट्रवाद तब तक फलफूल नहीं सकता जब तक वह अंतर्राष्ट्रयीता के फूलों के बग़ीचे में विकसित और पल्लवित नहीं होता।[1] सुकर्ण का स्पष्ट मत था कि अंतर्राष्ट्रीयता, राष्ट्रीयता, मानवता, विश्व-बन्धुत्व, परस्पर समन्वय और सहयोग

1. Sukarno, Lahirnja Pantjasila

के बिना विश्व का विकास और कल्याण सम्भव नहीं। सुकर्ण, विवेकानन्द के इस चिन्तन से बहुत प्रभावित थे जैसा कि स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि पूर्व का आध्यात्मिक दर्शन और पश्चिम का वैज्ञानिक विकास विश्व-बन्धुत्व का निर्माण करता है। भारत के पास आध्यात्मिक नेतृत्व की क्षमता है और पश्चिम वैज्ञानिक नेतृत्व में सक्षम। स्वामी जी की धारणा कि पश्चिमी राष्ट्र वैज्ञानिक रूप से कितने भी उन्नत हो जाएँ, परन्तु तत्त्वज्ञान और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में वे बच्चे ही हैं। उनकी भौतिक उन्नति लौकिक और समृद्धि तो हो सकती है, परन्तु वह आध्यात्मिकता का शाश्वत आनन्द नहीं दे सकती। इसलिए विश्व-बन्धुत्व, समन्वय, सहयोग ऐसा विकल्प है जिसमें सभी राष्ट्र पूर्णता का अनुभव कर सकते हैं।

3. तीसरा आधारभूत सिद्धान्त : प्रजातन्त्र/प्रतिनिधि शासन–व्यवस्था : *Musyawarah Mufakat* (Deliberative Consensus), an emphasis on Representative democracy which holds no ethnic dominance but an equal vote for each member of the council : प्रजातंत्र/प्रतिनिधि शासन के प्रतीक के रूप में इण्डोनेशियाई परम्परागत कृषि-समाज के प्रतीक 'भैंसे के सिर' (The Buffalo's) को लिया गया है। राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद की तरह ही सुकर्ण राजनीतिक विकेन्द्रीकरण पर आधारित लोकतान्त्रिक एवं अहिंसक समाज की स्थापना चाहते थे जिसमें नागरिकों को सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में समान अधिकार हो। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रेरित होकर सुकर्ण चाहते थे कि स्वतन्त्र इण्डोनेशिया में कोई छोटा-बड़ा न हो, समाज में छुआ-छूत एवं विभेद न हो, दरिद्रनारायण की सेवा हो और सभी वर्गों को समान अधिकार प्राप्त हो– इसके लिए सुकर्ण ने प्रतिनिधि शासन-व्यवस्था का सिद्धान्त दिया। इस विचार के तीन आधार दिये। प्रथम आधार 'मुफाकत' (mufakat) का सिद्धान्त अर्थात् मतैक्यता (unanimity) का सिद्धान्त; द्वितीय आधार 'परवकीलान' (Perwakilan) का सिद्धान्त अर्थात् प्रतिनिधित्व (Representation) का सिद्धान्त और तृतीय आधार 'परमुशावारातान' (Permjawaretan) का सिद्धान्त अर्थात् प्रतिनिधियों के मध्य विमर्श का सिद्धान्त (deliberation amongst representative)।

उपर्युक्त तीनों सिद्धान्तों को सुकर्ण ने एक सिद्धान्त 'कदाउलतान'

(kadaultan) अर्थात् 'व्यक्तियों की सम्प्रभुता' (Sovereignty of The People) अर्थात् प्रजातन्त्र का नाम दिया। सुकर्ण ने कहा कि स्वाधीन इण्डोनेशिया किसी व्यक्ति-विशेष अथवा किसी प्रभावशाली वर्ग का राज्य नहीं होगा, अर्थात् यह ऐसा राज्य होगा जिसमें **'All for all, one for all, all for one'** का स्वरूप उभरेगा।

सुकर्ण की व्यक्तियों की सम्प्रभुता में गहरी आस्था थी। व्यक्तियों की सम्प्रभुता के इस विचार को सुकर्ण ने 'ककेलुरगान' (Kekelurgaan) अर्थात् 'परिवार-व्यवस्था के सिद्धान्त' (Principle of Family System) से सम्बद्ध कर दिया। सुकर्ण ने कहा कि इण्डोनेशिया एक परिवार है। इण्डोनेशिया एक मुस्लिम-राज्य हो– ऐसी इच्छा रखनेवालों के लिए सुकर्ण ने कहा कि 'प्रतिनिधि सदन' एक ऐसा स्थान होगा जहाँ इस्लाम की रक्षा की जाएगी, परन्तु यदि वास्तव में इस्लाम धर्म को बढ़ाना है तो प्रतिनिधि-सदन में अधिक-से-अधिक इस्लामी प्रतिनिधि पहुँचाने होंगे। यदि ईसाई चाहते हैं कि इण्डोनेशियाई राज्य में ईसाइयत को बढ़ाना है तो उन्हें बाइबिल की शिक्षा के अनुरूप कार्य करना होगा और प्रतिनिधि-सदन में उन्हें अपने अधिक ईसाई-प्रतिनिधि भेजने होंगे।[1] सुकर्ण ने कहा कि हम, मैं और आप सभी मुस्लिम हैं, यदि तुम मेरे हृदय को देखोगे तो एक मुस्लिम-हृदय के अतिरिक्त कुछ नहीं पाओगे और 'बुंगकारनो' (Bung Karno) ('बुंगकारनो' दो शब्दों– 'बुग' अर्थात् बड़ा भाई, 'कारनो' अर्थात् कर्ण के मेल से बना है; जिसका प्रयोग बड़े भाई कर्ण सुकर्ण के लिए किया जाता है) का यह मुस्लिम-हृदय इस्लाम को प्रतिनिधि-सदन में फलता-फूलता देखना चाहता है।

इस प्रकार सभी धर्मों का समादर करना उन्हें फलते-फूलते देखना तथा अपने धर्म की गुणवत्ता आदि महत्त्व के आधार पर प्रतिनिधित्व की बात करना सुकर्ण ने स्वामी विवेकानन्द के शिकागो-भाषण से ग्रहण की हुई लगती है जिसमें स्वामी विवेकानन्द ने सभी धर्मों का आदर करने का आह्वान किया था। सुकर्ण कहता था कि न केवल राजनीतिक अपितु व्यक्तिगत जीवन में भी हमें एक दूसरे का आदर कर प्रजातान्त्रिक विश्वास को व्यक्ति के धरातल से ही पल्लवित करना चाहिये।

यदि व्यक्तिगत स्तर पर और परिवारिक स्तर पर हम अप्रजातान्त्रिक हैं

1. Sukarno, Lahirnja Pantjasila

तो सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर पर हम न तो प्रजातान्त्रिक हो सकते हैं और न ही प्रजातन्त्र की स्थापना सम्भव है। इसलिए सुकर्ण ने 'Living close to one another' का विचार दिया।[1] सुकर्ण ने व्यक्तियों के मध्य, समुदायों के मध्य, धर्मो के मध्य परस्परिक स्नेह, प्रेम और सौहार्द्र बनाने के लिए 'गोतोंग-रोयोंग' (Gotong Royong) अर्थात् परिवार-व्यवस्था (Family Stystem) का विचार दिया और कहा कि इसी गोतोंग-रोयोंग के आधार पर इण्डोनेशियाई राष्ट्र का निर्माण होगा। गोतोंग-रोयोंग का मतलब Mutual Help एवं Mutual Assistance है एक-दूसरे का सहयोग एवं एक-दूसरे की मदद करना। सुकर्ण ने अपनी आत्मकथा में गोतोंग-रोयोंग के संबंध में लिखा है कि 'गोतोंग-रायोंग इण्डोनेशिया की धरती पर गहराई से प्रतिस्थिापित सिद्धान्त है। काम के बदले काम, जब कोई भारी काम आ जाए तो सब एक-दूसरे को मदद करेंगे।' उदाहरण देते हुए सुकर्ण ने बताया कि यदि तुम अपना घर बनवाना चाहते हो तो मेरा दोस्त सीमेन्ट लाएगा, हम दोनों मिलकर घर बनाएँगे। अगर तुम्हारे घर कोई मेहमान आए हैं, चिन्ता की बात नहीं। मैं चुपचाप तुम्हारे घर के पीछे केक और चावल रख जाऊँगा। इन सब बातों का मतलब गोतोंग-रायोंग अर्थात् पारस्परिक मदद है। इस प्रकार की पारस्परिक मदद में न कोई छोटा होता है, न कोई बड़ा होता है और न ही सामाजिक विषमताएँ होती हैं। सामाजिक विषमताओं को दूर कर पारस्परिक एकता ही गोतोंग-रोयोंग है।

4. चौथा आधार सिद्धान्त : सामाजिक न्याय (Kesejahteraan Sosial (Social Welfare), influenced by the idea of the welfare state, an emphasis on populist Socialism) : सामाजिक न्याय के प्रतीक के रूप में गत्यात्मक प्राकृतिक संसाधन के प्रतीक चावल और कपास (The Rice and Cotton) को लिया गया है। जो कमज़ोर के संरक्षण और उसकी आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति का प्रतीक है। सुकर्ण की धारणा थी कि राजनीतिक प्रजातन्त्र तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है जब तक सामाजिक प्रजातन्त्र और सामाजिक न्याय की स्थापना नहीं हो जाती। सामाजिक न्याय द्वारा ही इण्डोनेशिया में खुशहाली आएगी और ग़रीबी दूर होगी। सुकर्ण ने स्पष्ट किया कि हमें ऐसी प्रजातान्त्रिक सामाजिक व्यवस्था चाहिए जिसमें सभी को

1. Sukarno, 'Exposition of Kedaultan Rakat',lecture delivered in Istana Nagara, Djakarta,September 03rd,1958

पर्याप्त खाने को, पहनने को, रहने को हो और सभी लोग खुशहाली के साथ मातृभूमि में रहें। इसलिए इण्डोनेशिया को 'सान्डांग-पन्डांग' (Sandang-Pandang) के सिद्धान्त की आवश्यकता है।[1] सुकर्ण ने कहा कि हमें पश्चिम का पूँजीवादी प्रजातन्त्र नहीं चाहिये। हमें तो ऐसा प्रजातन्त्र चाहिए जहाँ राजनीतिक एवं आर्थिक प्रजातन्त्र के साथ-साथ सामाजिक न्याय उपलब्ध हों।[2] सुकर्ण ने जावानीज न्याय के देवता रातू आदिल (Ratu Adil) से संबंधित 'रातू आदिल आन्दोलन' को उद्धृत करते हुए कहा कि रातू आदिल के सामाजिक न्याय के सिद्धान्त का मतलब प्रसन्नता से है। व्यक्ति ख़ुशी चाहते हैं। इसलिए सही अर्थों में इण्डोनेशियाई व्यक्तियों में प्यार और सौहार्द्र को समझना चाहिये। राजनीतिक समानता के साथ-साथ आर्थिक समानता के बिना राष्ट्र-निर्माण सम्भव नहीं।

इस प्रकार सुकर्ण ने इण्डोनेशियाई राष्ट्र को गत्यात्मक अवधारणा Gotong-Roong or Principle of Family system अर्थात् पारस्परिक सहयोग और मदद के सिद्धान्त पर आधारित बनाया। 'Gotong-Royong' अर्थात् One endevour, One act of service, and One task। इसे दूसरे अर्थों में 'One Karyo' (Karyo also spelt *kārya* = task) 'One gawe' (gawe also a Javanese word, which Means task), सुकर्ण ने कहा कि आओ इस 'Karyo' को, इस 'Gawe' को, इस 'Task' को, इस 'Act of Service' को, इस 'Togetherness' को, इस 'Belongings' को 'interest of each others' अर्थात् एक-दूसरे के हितों को संरक्षित करने के लिए स्वयं को मज़बूत करें और परस्पर संघर्ष को कमज़ोर करें। तभी ग़रीब-अमीर के बीच, ग़ैर-इण्डोनेशियाई और विदेशियों के बीच की दूरी को समाप्त किया जा सकेगा। सुकर्ण का 'गोतांग-रोयांग' का यह सिद्धान्त, स्वामी विवेकानन्द के अद्वैतवाद के विचारों से प्रभावित है।

5. पाँचवाँ आधारभूत सिद्धान्त : ईश्वर में विश्वास (KeTuhanan yang Berkebudayaan, an emphasis on monotheism and religiosity) : ईश्वर में विश्वास के प्रतीकस्वरूप 'स्वर्णिम तारा' (Golden Star) को रखा गया है जो इण्डोनेशियाई समाज में इस

1. Sukarno, Lahirnja Pantjasila
2. *Ibid*

विश्वास का भी प्रतीक है कि मृत्यु के बाद भी जीवन है। सुकर्ण की प्रबल धारणा थी कि इण्डोनेशिया में निवास करनेवाले सभी नागरिक अपने-अपने ईश्वर में विश्वास रखें। वास्तव में ईश्वर में विश्वास का सिद्धान्त इण्डोनेशियाई जनजीवन में व्याप्त धार्मिक मान्यताओं के प्रति प्रगाढ़ जागरूकता को दर्शाता है।[1] सुकर्ण पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। स्वामी विवेकानन्द की मान्यता थी धर्मांध मत बनो, परन्तु ईश्वर में विश्वास रखो। विवेकानन्द धर्म को सामाजिक संगठन और सहयोग की मूल शक्ति मानते थे। स्वामी जी की धारणा थी कि धर्म-सम्प्रदायों में अनेक विविधताएँ एवं अंतर्विरोध होते हुए भी एकता के अनेक क्षेत्र हैं। धर्म न तो पुस्तकों में है और न धार्मिक सिद्धान्तों में, अपितु धर्म अनुभूति में निवास करता है। धर्म जीवन का स्वाभाविक तत्त्व है। धर्म अनुकरण का व्यावहारिक पक्ष है। विवेकानन्द ईश्वर में विश्वास रखते थे, परन्तु धार्मिक संकीर्णता और रूढ़िवादिता के विरोधी थे। वे धर्मों के समन्वयात्मक स्वरूप का अनुकरण करने के पक्षधर थे। धर्म अंधश्रद्धा का विषय नहीं, बल्कि विज्ञान है। जिस प्रकार भौतिक जगत् के नियमों का अनुसन्धान कर वैज्ञानिक लक्ष्य प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार धर्म नैतिक और तत्त्वमीमांसीय जगत् से सत्य और मनुष्य के आस्तिक स्वभाव के नियम खोजता है।

सुकर्ण ने स्वामी विवेकानन्द के धर्म-संबंधी विचारों से प्रेरणा ली और सभी धर्मों में परस्पर सद्भाव और समन्वयात्मक रूप अपनाने को कहा। सुकर्ण ने स्पष्ट किया कि ईसाइयों को ईसा के उपदेशों में विश्वास रखना चाहिए एवं उनकी पूजा करनी चाहिये। मुस्लमानों को पैग़ंबर मुहम्मद के उपदेशों में तथा हिंदुओं एवं बौद्ध धर्मियों को अपनी आस्थाओं और धार्मिक पुस्तकों में विश्वास रखना चाहिये। कुल मिलाकर सभी को ईश्वर में विश्वास होना चाहिये। सुकर्ण ने कहा कि इण्डोनेशिया बिना किसी एक धार्मिक मान्यता के एक ऐसा राष्ट्र होगा जिसमें सब संयुक्त रूप से अपने-अपने ईश्वर में, अपने-अपने धर्म में विश्वास रखेंगे।[2] सर्वधर्मसमभाव का यह अनूठा प्रयोग सुकर्ण ने विवेकानन्द के विचारों से प्रेरणा लेकर किया। यही कारण है कि सुकर्ण ने इण्डोनेशिया को इस्लामी राष्ट्र बनाए जाने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, जब अगस्त, 1945 में इण्डोनेशियाई स्वाधीनता तैयारी समिति (The Preparatory Committee

1. Sukarno, Lahirnja Pantjasila
2. Ray, J.K., *Transfer of Power in Indonesia : 1942-1949*, Bombay, 1976, p.17

for Indonesian Independence) 'पनितिया पेर्सियापन केमर्देकान इण्डोनेशिया' (Panitia Persiapan Kemerdekaan Indonesia, PPKI) का गठन किया गया, तब इसका मुख्य उद्देश्य एवं कार्य जापानी अधिकारियों से इण्डोनेशियाई लोगों को सत्ता-हस्तान्तरण के संबंध में तैयारी करना था। सुकर्ण को तैयारी समिति का अध्यक्ष तथा मोहम्मद हट्टा का उपाध्यक्ष बनाया गया। समिति द्वारा इण्डोनेशिया के संविधान पर भी विचार-विमर्श किया गया। सत्ता-हस्तान्तरण समिति द्वारा बी०पी०यू०पी० के०आई०– (BPUPKI, Badan Penyelidik Usaha Persiapan Kemerdekaan Indonesia : The Committee for Preparatory Work for Indonesian Independence) द्वारा बनाए गए संविधान[1] के ढाँचे में कुछ संशोधनकर नये स्वतन्त्र इण्डोनेशिया के लिए संविधान बनाया। पी०पी०के०आई० द्वारा बी०पी०यू०पी०के०आई० के इस प्रावधान को कि केवल मुसलमान ही इण्डोनेशिया का राष्ट्रपति हो सकता है, हटाया गया और नियम बनाया गया कि कोई भी इण्डोनेशियाई प्रजाति एवं धर्म का अनुयायी इण्डोनेशिया का राष्ट्रपति हो सकता है। इस प्रकार 1945 का संविधान एक पंथनिरपेक्ष संविधान के रूप में स्थापित हुआ।

स्वामी विवेकानन्द धर्म की व्यावहारिकता के पक्षधर थे। उनकी धारणा थी कि धर्म सिद्धान्तों में घिरा न रहे अपितु वह मानव-कल्याण के लिए सहायक हो। धर्म मानवतावादी हो, सहिष्णु हो, एक धर्म दूसरे धर्म का विरोधी न हो।[2] स्वामी विवेकानन्द के धर्म और ईश्वर में विश्वास-संबंधी विचारों से प्रभावित होकर सुकर्ण ने धर्म की संकीर्णता और रूढ़िवादिता का विरोध किया और सभी धर्मों में परस्पर समन्वय तथा सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया तथा सभी इण्डोनेशिया-निवासियों को अपने-अपने ईश्वर में विश्वास करने का आह्वान किया। इस्लाम धर्म के सर्वाधिक अनुयायी होने के बाद और स्वयं इस्लामी वातावरण में दीक्षित होने के बाद भी सुकर्ण ने इण्डोनेशिया को इस्लामी राष्ट्र नहीं बनने दिया अपितु उसने अन्य सभी धर्मों में परस्पर समभाव के लिए प्रयास किया। फलतः इण्डोनेशिया राष्ट्रवादी राष्ट्र बना।

1. Kahin, G.M., *'Nationalism and Revolution in Indonesia'*, Ithaca, New York, 1958, p.121. Sukarno was not appointed Chairman of the BPKI but Radiman Wedioningrat was appointed as Chairman.
2. *Vivekanand Sahitya,* Vol. V, Janm Shatabdi Shanskaran, Advaitya Ashrma, Calcutta, 1985, pp.347-348.